Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 3 | अंक 23

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

22 रमज़ान 1439 हिजरी कमरी 7 इहसान 1397 हिजरी शमसी 7 जून 2018 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

وَاَتِمُّوا الۡحَجَّ
وَالۡعُمۡرَۃَ لِلّٰہِ ○

(सूरतुल बक़रा आयत :197)

अनुवाद:

और अल्लाह के लिए हज और उमरा को पूरा करो।

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि कश्ती नूह में हमारी शिक्षा का जो भाग है वह ज़रूर हर अहमदी को पढ़ना चाहिए बल्कि पूरी कश्ती नूह ही पढ़ें।

तुम परस्पर शीघ्र सुलह करो, अपने भाईयों के दोषों को क्षमा करो क्योंकि उद्दण्ड है वह मनुष्य जो अपने भाई से समझौता करने के लिए तैयार नहीं। वह काटा जाएगा क्योंकि वह उपद्रव फैलाता है।

अहंकार को त्याग दो, आपसी द्वेष मिटा दो, सच्चे होकर झूठे की भांति दीनता का अनुसरण करो ताकि तुम्हें क्षमा किया जा सके।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

कृपा और दया के निशान दिखाना सदा से ख़ुदा का स्वभाव है, परन्तु तुम इस स्वभाव के भागीदार तभी बन सकते हो जब तुम में और उसमें कुछ भी दूरी न रहे। तुम्हारी इच्छा उसकी इच्छा, तुम्हारी आकांक्षाएँ उसकी आकांक्षाएँ हो जाएं और तुम हर समय, हर स्थिति, सफलता या विफलता में उसकी चौखट पर नतमस्तक रहो ताकि वह जो चाहे करे । यदि तुम ऐसा करोगे तो तुम में वह ख़ुदा प्रकट होगा, जिसने एक लम्बे समय से अपना चेहरा छुपा लिया है। तुम में कोई है जो इस पर अमल करे और उसकी प्रसन्नता की कामना करे और उसकी नियति पर क्षुब्ध न हो। अत: तुम सँकट को देखकर क़दम और भी आगे बढ़ाओ कि यह तुम्हारी उन्नति का साधन है। एकेश्वरवाद को समस्त संसार में फैलाने के लिए अपनी सम्पूर्ण शक्ति से प्रयासरत रहो और उसकी प्रजा पर दया करो। उन पर अपनी वाणी, अपने हाथ या अन्य किसी प्रकार से अत्याचार न करो, प्रजा की भलाई हेतु प्रयत्नशील रहो, किसी पर अभिमान न करो भले ही वह तुम्हारे अधीन हो, किसी को गाली मत दो भले ही वह गाली देता हो, सदाचारी दीन और स्वच्छ हृदय वाले बन जाओ। प्रजा के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करो ताकि स्वीकार किए जाओ। बहुत हैं जो शालीनता प्रकट करते हैं परन्तु अन्दर से भेड़िए हैं, बहुत हैं जो ऊपर से स्वच्छ हैं परन्तु अन्दर से सांप हैं। अत: तुम ख़ुदा के समक्ष स्वीकार्य नहीं हो सकते जब तक अन्दर और बाहर समान न हो। बड़े होकर छोटों पर दया करो न कि उनका अपमान, ज्ञानी होकर अज्ञानियों को भलाई का पाठ पढ़ाओ न कि स्वयं को श्रेष्ठ समझकर उनका अनादर, धनवान होकर निर्धनों की सेवा करो न कि स्वयं श्रेष्ठ बनकर उन पर अभिमान। विनाश के मार्गों से भयभीत रहो, ख़ुदा से डरते रहो, शालीनता एवं सदाचार का अनुसरण करो, मानव की उपासना न करो, केवल अपने ख़ुदा के लिए त्याग करो, संसार से हृदय मत लगाओ, ख़ुदा के हो जाओ, उसी के लिए जीवन व्यतीत करो, उसके लिए प्रत्येक अपवित्रता और पाप से घृणा करो क्योंकि वह पवित्र है। हर सुबह तुम्हारे लिए साक्ष्य दे कि तुम ने ख़ुदा में लीन रहते हुए रात्रि व्यतीत की। हर शाम तुम्हारे लिए साक्ष्य दे कि तुमने डरते-डरते दिन व्यतीत किया। संसार के अभिशापों और फटकारों से मत डरो कि वे धुएँ की भांति देखते-देखते लुप्त हो जाती हैं। वे दिन को रात में परिवर्तित नहीं कर सकतीं। तुम ख़ुदा के अभिशाप से डरो जो आकाश से आता है और जिस पर गिरता है उसकी लोक व परलोक दोनों स्थानों पर जड़ काट देता है। तुम आडम्बर से स्वयं को सुरक्षित नहीं रख सकते क्योंकि तुम्हारे ख़ुदा की दृष्टि तुम्हारे पाताल तक है। क्या तुम उसको धोका दे सकते हो। अत: तुम सीधे और स्वच्छ हो जाओ, पवित्र और निष्कपट हो जाओ। यदि तुम्हारे अन्दर थोड़ा सा भी अंधकार विद्यमान है तो वह तुम्हारे सम्पूर्ण प्रकाश को नष्ट कर देगा। यदि तुम्हारे अन्दर किसी भी स्तर पर अभिमान, आडम्बर, आलस्य या स्वयं को ही श्रेष्ठ समझने की भावना व्याप्त है तो तुम ख़ुदा के समक्ष स्वीकार योग्य नहीं। ऐसा न हो कि तुम कुछ बातों को लेकर स्वयं को धोखा देते रहो कि जो कुछ तुमने करना था कर चुके, जबकि ख़ुदा की इच्छा है कि तुम्हारे जीवन का पूर्ण काया-कल्प हो। वह तुमसे एक मौत मांगता है जिसके पश्चात वह तुम्हें जीवन प्रदान करेगा। तुम परस्पर शीघ्र सुलह करो, अपने भाईयों के दोषों को क्षमा करो क्योंकि उद्दण्ड है वह मनुष्य जो अपने भाई से समझौता करने के लिए तैयार नहीं। वह काटा जाएगा क्योंकि वह एकता को खण्डित करता है। तुम हर पहलू से अहंकार को त्याग दो, आपसी द्वेष मिटा दो, सच्चे होकर झूठे की भांति दीनता का अनुसरण करो ताकि तुम्हें क्षमा किया जा सके। अहंकार में मत बढ़ो कि जिस द्वार पर तुम्हें बुलाया गया है उसमें एक अहंकारी मनुष्य प्रवेश नहीं कर सकता दुर्भाग्यशाली है वह मनुष्य जो इन बातों को नहीं समझता जो ख़ुदा के मुख से निकली और मैंने उनका वर्णन किया। यदि तुम चाहते हो कि आकाश पर ख़ुदा तुम से प्रसन्न हो तो तुम परस्पर इस प्रकार एक हो जाओ जैसे एक पेट में दो भाई। तुम में श्रेष्ठतम वही है जो अपने भाई के

शेष पृष्ठ 12 पर

124 वां जलसा सालाना क़ादियान

(जलसा सालाना के आरम्भ पर 125 वां साल)

दिनांक 28, 29, 30 दिसम्बर 2018 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 124 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 28, 29 और 30 दिसम्बर 2018 ई.(शुक्रवार, शनिवार व रविवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद। (नाज़िर इस्लाहो इर्शाद केन्द्रीय)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

जलसा सालाना ब्रिटेन 2017 ई के अवसर पर सय्यदना हज़रत अमीरूल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की व्यस्तता (भाग-8)

☆ मुरब्बियों को चाहिए कि वे ख़ुद अपने सम्मान बनाएं। मुबल्लिग़ का काम है कि परिणाम पैदा कर के दिखाएं।

विभिन्न विभागों के सक्रेटरी जो भी प्रोग्राम बनाते हैं उन का नियमित वार्षिक कैलेंडर होना चाहिए।

मुरब्बियों को पता होना चाहिए कि कौन कौन से प्रोग्राम हैं और किस प्रोग्राम में उन्होंने शामिल होना है

आप की जो भी मस्जिदें और नमाज़ केंद्र हैं वे पांचों नमाज़ों के लिए खुलनी चाहिए, इस की नियमित व्यवस्था होनी चाहिए। जो भी प्रशिक्षण के मुद्दे हैं, उनके लिए सेक्रट्री तरबियत से संपर्क करें और उन के सात मिलकर जमाअत के लोग तरबियत के हवाले से प्रोग्राम बनाएं।

यह मुबल्लिग़ों का काम है कि नतीजे पैदा कर के दिखाएं आप ने तब्लीग़ तथा तरबियत के काम करने हैं। कैसे करने हैं ये आप का काम है अपने हालात को सामने रखते हुए अपने प्रोग्राम बनाएं।

जब आप ने दो परिवारों के बीच सामंजस्य करना होगा और उन के झगड़े निपटाने हैं तो फिर आप ने किसी पक्ष की पार्टी नहीं बनना। किसी का पक्ष नहीं लेना।

जो भी जमाअत के उहदेदार हैं उन के साथ मिल कर बैठें और जो भी कठिनाइयां हैं उन का हल निकालें हिक्मत के साथ काम करें और जो भी वहीं की ज़रूरतें हैं इस के बारे में वहां के सम्बंधित लोगों को बताएं।

जलसा में सम्मिलित होने वाले सम्मानित सदस्यों के ईमान वर्धक विचार

दुनिया के विभिन्न देशों से जलसा में शामिल होने वाले प्रतिनिधियों की हज़रत अमीरूल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से मुलाकातें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की इन दिनों में असामान्य व्यस्तता का संक्षिप्त उल्लेख

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

गाम्बिया का प्रतिनिधिमंडल

इस के बाद गाम्बिया से आने वाले पुरुष तथा औरतों पर आधारित वफद ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। गाम्बिया से इस साल 21 लोगों पर आधारित वफद जलसा सालाना यूके में शामिल हुआ।

प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने बारी बारी अपना परिचय करवाया और हुज़ूर अनवर की सेवा में ख़ुद के लिए और परिवार के लिए दुआ का आवेदन किया और कहा कि जलसा सालाना के सभी भाषणों से हमारे ज्ञान में वृद्धि हुई और हमारा ईमान बढ़ा है और हम ने यहाँ बहुत कुछ सीखा है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि आपको अपने वाकफीन बच्चों को समय पर स्कूलूं में दाखिल करवाया करें ताकि वे माध्यमिक की शिक्षा शीघ्र पूरी करें और फिर जामिया में अपनी सही उम्र में दाख़िल हों। आपके यहां बड़ी उम्र में बच्चे माध्यमिक की शिक्षा पूरी करते हैं ।

देश की राजनीतिक परिस्थिति के संदर्भ में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने कुछ मामलों के बारे में अमीर साहिब गाम्बिया से पूछा।

गाम्बिया प्रतिनिधिमंडल की मुलाकात 12 बजकर 40 मिन्ट तक जारी रही। अन्त में वफद के मेम्बरों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के साथ बारी बारी फैमली तस्वीर लीं

मिस्त्र का प्रतिनिधिमंडल

इस के बाद कार्यक्रम के अनुसार कि मिस्त्र से आने वाले प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से मिलने का सौभाग्य प्राप्त किया। मिस्त्र से इस साल 9 लोगों पर आधारित प्रतिनिधिमंडल आया था।

वफद ने कहा कि हम जब जलसा में आते हैं तो हर बार हमारी आध्यात्मिकता बढ़ जाती है। हमारे ईमान में तरक्की होती है क्योंकि ख़लीफतुल मसीह यहां मौजूद हैं। हम जलसा के सभी सेवा करने वालों का भी धन्यवाद देते हैं। ख़ुदा तआला हमारे हालात ठीक करे। हम मिस्त्र के अहमदी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ को प्यार करते हैं और मिस्त्र के लिए दुआ का निवेदन करते हैं। कि ख़ुदा तआला हमारी परिस्थितियों को ठीक कर दे। मिस्त्र एक दिल की तरह है हदीस में है कि दिल ठीक हो तो सब कुछ ठीक होता है इसलिए, मिस्त्र के लिए विशेष दुआ का निवेदन हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, अल्लाह तआला फजल फरमाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मिस्त्र से दूसरे लोगों को भी लेकर आया करें दो लोगों का किराया मैं अदा किया करूंगा। इस पर सदस्यों ने निवेदन किया कि दुआ करें कि हुकूमत हमें वीज़ा दे दिया करे। लोग बहुत दुखी होते हैं कि उन्हें वीज़े नहीं मिलते। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि अल्लाह फज़ल फरमाए।

मिस्त्र के वफद की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के साथ यह मुलाकात 12 बजकर 25 मिन्ट तक जारी रही अन्त में वफद के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर ख़िचावाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

यूगेण्डा का वफद

इस के बाद यूगेण्डा से आने वाले वफद ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। यूगेण्डा से इस बार 7 लोगों पर आधारित वफद आया था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने अमीर साहिब तथा मुबल्लिग़ इन्चार्ज यूगेण्डा और सेक्रेट्री तब्लीग़ से जमाअत के हवाले से और प्रोग्रामों के बारे में पूछा और देश की अवस्था के बारे में पूछा

अमीर साहिब यूगेण्डा ने असाइलम लेने वाले लोगों के बारे में अपनी रिपोर्ट पेश की और समस्याओं का वर्णन कर के दुआ के निवेदन किया इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि अल्लाह तआला फज़ल

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

असदुल्लाह और असदे रसूल हज़रत हमज़ा रज़ि अल्लाह तआला अन्हो के इस्लाम स्वीकार करने, धार्मिक ग़ैरत, बहादुरी इज़्ज़ेत नफस , दुआओं में तल्लीनता, रिश्तेदारों का ध्यान, शहादत की रूह को पिघलाने वाली घटनाएं।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 4 मई 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ
اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर फरमाया कि

"हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रादुर्भाव के समय अरब क़ौम की सभ्यता और चरित्र और रूहानियत की क्या अवस्था थी। घर-घर में जंग और शराब पीना और ज़ना और लूट मार और प्रत्येक बुराई मौजूद थी। कोई सम्बन्ध अल्लाह तआला और नेक गुणों के साथ किसी को प्राप्त नहीं थे। प्रत्येक फिरऔन बना फिरता था परन्तु आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आने के बाद जब इस्लाम में शामिल हुए तो इस प्रकार की अल्लाह तआला की मुहब्बत और एकता की रूह उन में पैदा हो गई कि प्रत्येक ख़ुदा तआला के मार्ग में मरने के लिए तय्यार हो गया। उन्होंने बैअत के वास्तविकता को स्पष्ट कर दिया और अपने अनुकरण से इस का नमूना दिखा दिया।"

आप फरमाते हैं कि

"आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा ने कितनी वफादारी का नमूना दिखाया जिस का उदाहरण न पहले था और न भविष्य में दिखाई देता है।" परन्तु आप फरमाते हैं कि "ख़ुदा तआला चाहे तो फिर वैसा ही कर सकता है। इन नमूनों से दूसरों के लिए लाभ है। इस जमाअत में" (अर्थात अपनी जमाअत के बारे में फरमाते हैं।) "ख़ुदा तआला इस प्रकार के नमूने पैदा कर सकता है।" आप फरमाते हैं कि "ख़ुदा तआला ने सहाबा के बारे में क्या खूब फरमाया है

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ
وَ مِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ

(अल्अहज़ाब 24)

कि मोमिनों में इस प्रकार के मर्द हैं जिन्होंने अपने वादा को सच्चा कर दिखाया जो उन्होंने ख़ुदा तआला के साथ किया था। अत: उन में से कुछ अपनी जानें दे चुके हैं और कुछ अपनी जानें देने को तय्यार हैं।" फरमाते हैं कि "सहाबा कि प्रशंसा में कुरआन शरीफ से आयतें इकटठी की जाऐं तो उस से बढ़ कर कोई आदर्श नहीं।"(मल्फूज़ात भाग 7 पृष्ठ 431 से433 प्रकाशन 1985 ई यू.के) अर्थात इस आयत से बढ़ कर जो आप सहाबा के बारे में वर्णन हुआ है। अत: नेकियों के कुरबानी के यह नमूने हमारे लिए आदर्श हैं।

पिछले कुछ समय से खुत्बों में सहाबा के हालात वर्णन करता रहा हूं जिन में बदरी सहाबी भी थे और दूसरे साहाबा भी थे परन्तु मुझे विचार आया कि पहले केवल बदर में शामिल सहाबा का वर्णन करूं उन का एक विशेष स्थान है। ये वे लोग हैं जिन पर अल्लाह तआला राज़ी हुआ और अल्लाह तआला की विशेष प्रसन्नता प्राप्त करने वाले लोग हैं।

आज हज़रत हमज़ा पुत्र अब्दुल मुतिलब का वर्णन करूंगा। उन का वर्णन विशेष रूप से जिस प्रकार यह मुसलमान हुए तारीख़ और हदीसों में वर्णन है। इस तरह से इन की शहादत की घटना भी। यह सय्यदुस्शुहदा के उपनाम से प्रसिद्ध हैं और इसी तरह से असदुल्लाह और असदे रसूल भी इन का उपनाम है। हज़रत हमज़ा कुरैश के सरदार हज़रत अब्दुल मुतलिब के बेटे और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहिस्सलाम के चाचा थे। हज़रत हमज़ा की माता का नाम हाला था और यह भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की माता हज़रत आमना की चेचेरी बहन थीं। हज़रत हमज़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से उमर में दो साल और एक रिवायत में हैं कि चार साल बड़े थे।(अलइस्तेयाब जिल्द 1 पृष्ठ 369 हमज़ा बिन अब्दुल्लाह प्रकाशन दारुल हैल बैरूत 1992ई)(असदुल ग़ाबा जिल्द 2 पृष्ठ 67 हमज़ा बिन अब्दुल्लाह प्रकाशक दारुल कुतुबुल इल्मिया बैरूत 1996ई) हज़रत हमज़ा आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दूध भाई भी थे एक लौंडी सूबिया ने दोनों को दूध पिलाया था।(शरह ज़रकानी जिल्द 4 पृष्ठ 499 बाब ज़िक्र मनाकिब अलअब्बास प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1996ई) हज़रत हमज़ा ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नबुव्वत के दावा के 6 साल बाद दारे अरकम के ज़माना में इस्लाम स्वीकार किया था।(अत्तबकाते कुबरा लेइब्ने साद जिल्द 3 पृष्ठ 6 हमज़ा बिन अब्दुल्लाह प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई) हज़रत हमज़ा के इस्लाम स्वीकार करने की घटना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह ने तारीख़ी घटनाओं की रोशनी में अपने अंदाज़ में वर्णन किया है और इस का कुछ सार मैं अपने शब्दों में वर्णन करूंगा तथा कुछ विस्तार भी। इस को सुन कर इंसान जब अपनी कल्पना में लाता है कि किस प्रकार हज़रत हमज़ा ने इस्लाम स्वीकार किया था और क्या कारण हुआ और किस प्रकार उन को आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में ग़ैरत आयी। जब अबू जहल ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ऊपर अत्याचार किया था बहरहाल इस घटना का वर्णन इस प्रकार है कि एक दिन आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सफा और मरवा पहाड़ियों के मध्य में एक पत्थर पर बैठे हुए थे और निसन्देह यही सोच रहे थे कि ख़ुदा तआला की तौहीद को किस प्रकार स्थापित किया जाए कि इतने में अबू जहल आ गया। उस ने आते ही कहा कि मुहम्मद(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) तुम अपनी बातों से रुकते नहीं यह कह कर उस ने आप को गन्दी गालियां देनी शुरू कर दी। आप ख़ामोशी के साथ उस की गन्दी गालियों को सुनते रहे और सहन किया। एक शब्द भी आप ने मुहं से न निकाला अबू जहल जब जी भर कर गालियां दे चुका तो इस के बात वह बदकिस्तमत आगे बढ़ा और उस ने आप के मुंह पर थप्पड़ मारा मगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फिर भी उसे कुछ न कहा। आप जिस स्थान पर बैठे थे और जहां अबू जहल ने आप को गालियां दीं थीं वहां सामने ही हज़रत हमज़ा का घर था। हज़रत हमज़ा उस समय तक ईमान न लाए थे। उन की आदत थी कि रोज़ाना तीर लेकर सुबह शिकार पर चले जाता करते थे। और शाम को वापस आया करते थे और कुरैश की जो मज्लिसें थीं उन में बैठा करते थे। उस दिन अबू जहल ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गालियां दीं और बुरा व्यवहार किया वह शिकार पर गए हुए थे परन्तु इत्तेफाक इस तरह हुआ कि जब अबू जहल इस प्रकार कर रहा था हज़रत हमज़ा की एक दासी दरवाज़ा पर खड़े हो कर यह नज़ारा देख रही थी। अबू दहल जब बार बार आप पर हमला कर रहा था और आप को बहुत अधिक गालियां दे रहा था और आप ख़ामोशी और शान्ति से उस की गालियां सुन रहे तो वह दासी दरवाज़ा पर खड़े हो कर यह नज़ारा देख रही थी। हज़रत मुस्लेह मौऊद अलैहिस्सलाम लिखते हैं कि निसन्देह वह एक औरत थी और काफिरा थी परन्तु पुराने ज़माना में जब कि मक्का के लोग अपने ग़ुलामों पर अत्याचार करते थे वहां यह भी होता था कि कुछ शरीफ अपने ग़ुलामों के साथ हुस्ने सुलूक भी करते थे और अन्त में बहुत लम्बे समय के बाद वह ग़ुलाम इसी ख़ानदान का हिस्सा समझे जाते थे। इसी प्रकार हज़रत हमज़ा की वह दासी भी थी जब उस ने यह नज़ारा अपनी आंख़ो से देखा और अपने कानों से सब कुछ सुना इस का बहुत प्रभाव हुआ परन्तु कुछ कर नहीं सकती थी। देखती रही सुनती रही और अन्दर ही अन्दर पेच खाती रही जलती रही। जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वहां से उठ कर चले गए तो वह भी अपने काम काज में लग गई। शाम को हज़रत हमज़ा जब अपने शिकार से वापस आए अपनी सवारी पर से उतरे और तीर और कमान हाथ में पकड़े बहादुरी के अंदाज़ से घर में दाख़िल हुए वह दासी उस समय उठी और उस ने कहा कि उस ने बहुत देर से ग़म और

ग़ुस्सा की भवानाओं को दबाया हुआ था। उस ने बहुत ज़ोर से हज़रत हमज़ा को कहा कि तुम्हें शर्म नहीं आती कि बहुत बहादुर बने फिरते हो। हज़रत हमज़ा यह सुन कर हैरान हुए और पूछा कि क्या मामला है दासी ने कहा कि मामला क्या है तुम्हारा भतीजा मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यहां बैठा था कि अबू जहल आ गया और उस ने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हमला कर दिया और बहुत अधिक गालियां देने लग गया और फिर उन के मुंह पर थप्पड़ मारे मगर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आगे से उफ तक नहीं किया और ख़ामोशी के साथ सुनते रहे। अबू जहल गालियां देता गया और देता गया और थक कर चला गया मगर मैंने देखा कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन की किसी बात का उत्तर तक न दिया। तुम बहुत बहादुर बनते हो अकड़ेते हुए शिकार से वापस आए हो तुम्हें शर्म नहीं आती कि तुम्हारी उपस्थिति में तुम्हारे भतीजे के साथ यह व्यवहार हो रहा है। हज़रत हमज़ा उस समय तक मुसलमान नहीं हुए थे और उस समय तक उन की गिनती कुफ्फार के सरदारों में होती था और रियासत के कारण इस्लाम को स्वीकार करने के लिए तय्यार नहीं थे हालांकि समझते थे कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सच्चे हैं मगर हज़रत हमज़ा अपनी शान और जलाल को ईमान पर कुरबान करन के लिए तैय्यार न थे मगर जब उन्होंने अपनी दासी से यह घटना सुनी तो उन की आंखों में ख़ून उतर आया और उन की ख़ानदानी ग़ैरत जोश में आ गई अत: वह इसी प्रकार बिना आराम किए क्रोध से काबा की तरफ रवाना हो गए पहले उन्होंने काबा की परिक्रमा की और उस के बाद मज्लिस की तरफ बढ़े जिस में अबू जहल बैठा हुआ अपनी बड़ें मार रहा था गप्पें मार रहा था इस घटना को बहुत मज़ा ले कर सुना रहा था। अहंकार के साथ यह वर्णन कर रहा था कि आज मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गालियां दीं और आज मैंने यह व्यवहार किया। हज़रत हमज़ा जब उस मज्लिस में पहुंचे तो उन्होंने जाते ही कमान बड़े ज़ोर से अबू जहल के सर पर मारी और कहा कि तुम अपनी बहादुरी के दावे कर रहे हो कि मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस प्रकार अपमानित किया और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उफ तक न किया। अब मैं तुझे अपमानित करता हूँ अगर तुझ में कुछ साहस है तो मेरे सामने बोल। अबू जहल उस समय मक्का के अन्दर एक बहादुर बादशाह की तरह था। कौम का सरदार था। उस की फिरऔन वाली हालत थी। जब उस के साथियों ने यह माजरा देखा तो वे जोश के साथ उठे और उन्होंने हमज़ा पर हमला करना चाहा मगर अबू जहल जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़ामोशी के साथ गालियां सहन करने के कारण फिर अब हमज़ा की दिलेरी और साहस के कारण डर गया था बीच में आ गया और उन लोगों को हमला करने से रोका और कहा कि तुम लोग जाने दो और कहा कि वास्तव में बात यह है कि मुझ से ही अत्याचार हुआ था हमज़ा सच्चाई पर हैं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद ने अपने अंदाज़ में लिखा कि जिस समय मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सफा और मरवा की पहाड़ियों से वापस घर आए थे अपने दिल में यह कह रहे थे कि मेरा काम लड़ना नहीं बल्कि धैर्य के साथ गालियां सहन करना है मगर ख़ुदा तआला अर्श पर कह रहा थी कि अलैसल्लाहो बेकाफिन अब्दुहू (अर्थात क्या अल्लाह अपने बन्दा के लिए काफी नहीं) कि हे मुहम्मद तू लड़ने के लिए तय्यार नहीं मगर क्या हम मौजूद नहीं जो तेरे स्थान पर दुश्मनों से मुकाबला करें। अत: ख़ुदा तआला ने उसी दिन उबू जहल से मुकाबला करने वाली एक जान कुरबान करने वाला आप को दे दिया। और हज़रत हमज़ा ने उसी मज्लिस में जिस में उन्होंने अबू जहल के सिर पर कमान मारी थी अपने ईमान का एलान कर दिया और अबू जहल को सम्बोधित करते हुए कहा कि तूने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गालियां दी हैं सिर्फ इस लिए के वह कहता है कि मैं ख़ुदा का रसूल हूं और फिरश्ते मुझ पर उतरते हैं। थोड़ा काम खोल कर सुन लो कि मैं भी आज से मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के धर्म पर हूं और मैं भी वही कहता हूं कि जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कहते हैं और अगर तुझ में हिम्मत है तो मेरा मुकाबला कर। यह कह कर हमज़ा मुसलमान हो गए।

(उद्धरित रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सारे प्रमुख घटनाएं अनवारुल उलूम जिल्द 19 पृष्ठ 137 से 139)

रिवायत में है कि हज़रत हमज़ा के मुसलमान होने के बाद मक्का में जो मुसलमान थे उन के ईमान को बहुत मज़बूती मिली।(अत्तबकातुल कुबरा लेइब्ने सअद जिल्द 3 पृष्ठ 6 हमज़ा बिन अब्दुल मुतललिब प्रकाशक दारुल कुतब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई) बल्कि अंग्रेज़ इतिहास वाले सर विल्यम म्यूर ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उद्देश्य को हज़रत हमज़ा और हज़रत उमर के इस्लाम स्वीकार करने से बहुत मज़बूती मिली।

(The Life of Mohammad by Sir William Muir, heading the prophat insulted pg 89 Edition 1923))

हज़रत हमज़ा ने दूसरे मुसलमानों के साथ मदीना की तरफ हिजरत फरमाई तो हज़रत उम्मे कुलसूम बिन अलहदम के मकान पर ठहरे और एक रिवायत के अनुसार आप ने सअद बिन हैसमा के यहां निवास किया। बहरहाल मदीना हिजरत करने की बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत हमज़ा और हज़रत ज़ैद बिन हारसा को भाई बनाया। इसी कारण से उहद के जंग में जाते हुए हज़रत हमज़ा ने हज़रत ज़ैद के लिए वसीयत फरमाई थी।(अत्तबकातुल कुबरा लेइब्ने सअद जिल्द 3 पृष्ठ 6 हमज़ा बिन अब्दुल मुतललिब प्रकाशक दारुल कुतब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

मदीना हिजरत के बाद भी कुफ्फार के अत्याचार कम नहीं हुए थे। उन की छेड़छाड़ मुसलमानो को तंग करना समाप्त नहीं हुआ था इस लिए मुसलमानों को बहुत होशियार रहना पड़ता था और कुफ्फार पर नज़र रखनी पड़ती थी। रिवायत में है कि कुरैश की हरकतों और चालों से ख़बरदार रहने के लिए नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मुहिमों की आवश्यकती पड़ी जिस में हज़रत हमज़ा को विशेष रूप से सेवा का अवसर मिला। रबीउल अव्वल दो हिजरी में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत हमज़ा के नेतृत्व में तीस ऊंठ सवारों का एक दल पूर्व की तरफ भिजवाया हज़रत हमज़ा और आप के साथी जल्दी जल्दी वहां पहुंचे तो क्या देखते हैं कि मक्का का रईस तीन सौ सवारों का लश्कर लेकर इन के स्वागत में मौजूद था। लेकर मुसलमानों का संख्या से यह दस गुना अधिक संख्या थी मगर मुसलमान ख़ुदा और उस के रसूल के आदेश के अनुपालन में घर से निकले थे और मौत का डर उन्हें पीछे नहीं हटा सकता था। दोनों एक दूसरे के मुकाबला में आ गए और लड़ाई शुरू होने वाली थी कि इस क्षेत्र के रईस मजदी पुत्र अमरो अलजुहनी जिस के दोनों पक्षों के साथ सम्बंध थे ने मध्य में आकर सुलह सफाई करवाई और लड़ाई होते होते रह गई।

(उद्धरित सीरत ख़ात्मन्नबिय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 329)

यह भी रिवायत आती है कि जो पहला झण्डा था रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत हमज़ा को दिया था। जब कि कुछ रिवायतों में यह है कि हज़रत अबू उबैदह और हज़रत हमज़ा एक जंग में रवाना हुए थे इस में शंका है।(कि झण्डा किस को प्रदान किया) परन्तु बहरहाल दो हिजरी में कैनकाअ की जंग में जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झण्डा था वह हज़रत हमज़ा ही उठाए हुए थे।

(सीरत इब्ने हश्शाम पृष्ठ 283 अध्याय सिरया हमज़ा इला सैफ प्रकाशन दार इब्ने हज़म बैरूत 2009 ई)

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस आदेश पर के अपने आत्म सम्मान और गरिमा को स्थापित रखना उत्तम है और यह हमेशा स्थापित रखना चाहिए। हज़रत हमज़ा ने सदैव इस पर अनुकरण किया और स्थापित रहे। अत: रिवायतों में आता है कि मदीना हिजरत करने के बाद दूसरे मुसलमानों की तरह हज़रत हमज़ा की आर्थिक स्थित बहुत ख़राब हो गई। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर वर्णन करते हैं कि एक दिन इसी अवस्था में हज़रत हमज़ा आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए और निवेदन किया की कोई सेवा मेरे ज़िम्मा करें ताकि कमाई की कोई अवस्था पैदा कर लूं तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया हे हमज़ा अपनी आत्म गरिमा और सम्मान को स्थापित करना ज़्यादा बेहतर है कि इस मार देना। हज़रत हमज़ा ने निवेदन किया कि मैं तो इस जीवित रखना ही पसन्द करता हूं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया तो फिर अपने सम्मान की हिफाज़त करो।

(मस्लद अहमद बिन हंबल जिल्द 2 पृष्ठ 624 हदीस 6639 प्रकाशक आलेमुल कुतुब बैरूत 1998 ई)

फिर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप को दुआओं पर ज़ोर देने की तहरीक फरमाई और कुछ विशेष दुआएं सिखाई अत: हज़रत हमज़ा की रिवायत है आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इस दुआ को अनिवार्य कर लो

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُکَ بِاسۡمِکَ الۡاَعۡظَمِ وَرِضۡوَانِکَ الۡاَکۡبَر

(अलअसाबा फी तमीज़िस्सहाबा जिल्द 2 पृष्ठ 106 हमज़ा बिन अब्दुल मुतलिब

प्रकाशक दारुल कुतुब अल इलमिया बैरूत 1995 ई) अर्थात हे अल्लाह मैं तुझ से सब से बड़े नाम और तेरी रज़ा का वास्ता देकर मांगता हूं और फिर हमेशा आप ने इस के फल खाए। अत: हज़रत हमज़ा को दुआओं पर कितना ईमान और भरोसा था इन बातों का भी रिवायतों से प्रकटन होता है और क्यों न होता जब कि इन दुआओं की ही बरकत से ज़ाहिर में इस ख़ाली हाथ मुहाजिर को अल्लाह तआला ने घर और सारी ज़रूरत की चीज़ें प्रदान कीं। कुछ समय बाद हज़रत हमज़ा ने बनी नजार की एक औरत ख़ौला बिन्त कैस से शादी कर ली। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन के घर पधारते। हज़रत ख़ौला बाद में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस युग की मुहब्बत भरी बातें सुनाया करती थीं। फरमाती हैं कि एक बार नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे घर पधारे। मैंने निवेदन किया हे अल्लाह के रसूल मैंने सुना है कि आप फरमाते हैं कि कयामत के दिन आप को हौज़े कौसर प्रदान किया जाएगा जो बहुत बड़ा होगा। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया हैं यह सच है और यह भी सुन लो कि मुझे साधारण लोगों की तुलना में तुम्हारी क़ौम अंसार का इस हौज़े कौसर से पानी पीना अधिक पसन्द है। (मुस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 8 पृष्ठ 822 हदीस 27859 मस्नद ख़ौला बन्ति हकीम मतबूआ आलेमुल कुतुब बैरूत 1998 ई) अंसार से कैसी मुहब्बत थी केवल इस कारण से कि जब अपनी क़ौम ने आप को निकाला तो अंसार थे जिन्होंने आप पर अपना सब कुछ कुरबान कर दिया।

तारीख़ में बदर की जंग के बारे में यह रिवायत भी मिलती है कि यह दो हिजरी में हुई। बदर की जंग में कुफ्फार की तरफ से असवद बिन अब्दुल असद मख़ज़ूमी निकला यह बहुत ही शरारती और बुरा आदमी था। उस ने वादा किया था कि मैं ज़रूर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हौज़ में से पानी पियूंगा जो पानी की जगह मुसलमानों ने रखी थी या इस को ख़राब कर दूंगा या गिरा दूंगा या उस के पास मर जाऊंगा। वह इस इरादे से निकला हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुतलिब इस का मुकाबला करने के लिए निकले। जब इन दोनों का मुकाबला हुआ तो हज़रत हमज़ा ने तलवार का वार कर के उस की आधी पिंडली काट दी वह कमर के बल गिरा और अपनी कसम पूरी करने के लिए हौज़ की तरफ बढ़ा। हज़रत हमज़ा ने उस का पीछा किया और वार कर के उस का काम पूरा कर दिया।(सीरत इब्ने हश्शाम पृष्ठ 298-299 प्रकाशन दारे इब्ने हज़म बैरूत 2009 ई) वह हौज़ के करीब मर तो गया परन्तु पानी ख़राब न कर सका।

हज़रत अली रज़ि अल्लाह तआला अन्हो जंगे बदर के बारे में फरमाते हैं इस में काफिरों की संख्या मुसलमानों से बहुत अधिक थी। सारी रात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला के समक्ष दुआओं में लगे रहे। जब कुफ्फार का लश्कर हमारे सामने हुआ और हम आमने सामने हुए तो अचानक एक आदमी पर नज़र पड़ी जो लाल ऊंठ पर सवार था और लोगों के मध्य उस की सवारी चल रही थी। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली को फरमाया है अली हमज़ा जो कुफ्फार के निकट खड़े हैं उन को पुकार कर पूछो कि यह कौन आदमी हैं। फिर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अगर उन लोगों में से कोई उन्हें भलाई की नसीहत करने वाला है तो वह लाल ऊंठ वाला आदमी है। इतनी देर में हज़रत हमज़ा भी आ गए और उन्होंने बताया कि वह उतबा बिन रबीआ है जो कुफ्फार को जंग से मना कर रहा है जिस के उत्तर में अबू जहल ने उसे कहा कि तुम डरपोक हो और लड़ाई से डरते हो। उतबा ने जोश में आकर कहा कि आज देखते हैं कि कौन डरपोक है।(मुस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 1 पृष्ठ 338-339 हदीस 948 आलेमुल कुतुब बैरूत 1998 ई) हज़रत अली वर्णन करते हैं कि उतबा बिन रबीआ उस के पीछे उस का बेटा और भाई भी निकले और पुकार कर कहा कि कौन मुकाबला के लिए आता है तो अंसार के कई नौजवानों ने इस का जवाब दिया। उतबा ने पूछा कि तुम कौन हो उन्होंने बताया कि हम अंसार हैं उत्बा ने कहा कि हमें तुम से कुछ लेना देना नहीं हम तो केवल अपने चाचा के बेटों से जंग का इरादा रखते हैं तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया हे हमज़ा उठो हे अली उठो और हे उबैद बिन हारिस आगे बढ़ो। हमज़ा तो उतबा की तरफ बढ़े और हज़रत अली कहते हैं कि मैं शैबा की तरफ बढ़ा और उबैदह और वलीद के मध्य झड़प हुई और दोनों ने एक दूसरे को बहुत ज़ख्मी किया और फिर हम ने वलीद की तरफ ध्यान दिया और उस को मार डाला और उबैदह को हम जंग के मैदान से उठा कर ले आए।(सुनन अबू दाऊद किताबुल जिहाद हदीस 2665) इन दोनों अर्थात अली और हमज़ा ने तो अपने दुश्मन को मार दिया। जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया हे हमज़ा उठो हे अली उठो और हे उबैदह बिन हारिस आगे बढ़ो इस अवसर पर जब तीनों खड़े हुए और उतबा की तरफ बढ़े तो उतबा ने कहा कि कुछ बात करो ताकि तुम को पहचान लूं क्योंकि वह कवच पहले हुए थे। उन के मुहं ढके हुए थे इस अवसर पर हज़रत हमज़ा ने कहा कि मैं हमज़ा हूं जो अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का शेर है तो उतबा ने कहा अच्छा मुकाबला है। हज़रत हमज़ा की बहादुरी की यह अवस्था थी कि बदर की लड़ाई में कुफ्फार को भयभीत करने के लिए आप शुतर मुर्ग़ का पर लगा कर जंग के मैदान में गए। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ से रिवायत है कि उम्मय्या बिन ख़लफ कुरैश के सरदारों में से थे जो मक्का में हज़रत बिलाल को कष्ट दिया करता था बदर की जंग में अंसार को हाथों मारा गया उस ने मुझ से पूछा कि यह कौन आदमी है जिस के सीने पर शुतर मुर्ग़ का पर लगा हुआ है। मैंने कहा हमज़ा बिन अब्दुल मुतिलब हैं उमय्या कहने लगे कि यही वह आदमी है जिस ने आज हमें सब से अधिक नुकसान पहुंचाया है।

(सीरत इब्ने हश्शाम पृष्ठ 302 अध्याय मक्तल उमय्या बिन ख़लफ दार इब्ने हज़म बैरूत 2009 ई)

अंग्रेज़ लेखक सर विल्यम म्यूर जंग बदर में हज़रत हमज़ा के बारे में लिखता है कि हमज़ा लहराते हुए शुतर मुर्ग़ के पर के साथ सारी स्थानो पर स्पष्ट दिखाई देते थे।

(The Life of Mohammad by Sir William Muir, heading the prophat insulted pg 260 Edition 1923))

और भी कई सरदारों को जंग में आप ने कत्ल किया।

जंगे उहद में आप ने बहादुरी के कमाल दिखाए। आप की यह बहादुरी कुरैश की आंख़ों में खटकती रहती थी। बुख़ारी में इस का विस्तार इस प्रकार वर्णन है कि

हज़रत ज़ाफिर बिन अमरो उमय्या ज़मरी कहते हैं कि मैं उबैदुल्लाह बिन अदी बिन ख़यार के साथ सफर पर गया। जब हम हमस जो मुलक इराक का प्रसिद्ध शहर है उस में पहुंचे तो उबैदुल्लाह बिन अदी ने मुझ से कहा कि क्या आप वहशी बिन हरब हब्शी से मिलना चाहते हैं। हज़रत हमज़ा के कत्ल के बारे में उस से पूछेंगे। उस ने कहा कि अच्छा और वहशी हमस में रहा करता था। अत: हम ने उस का पता पूछा हम से कहा गया कि वह अपने महल के साया में बैठा है जैसे बड़ा मश्क हो। जाफर कहते हैं कि हम उस के पास जाकर थोड़ी देर खड़े रहे। हम ने अस्सलामो अलैकुम कहा उस ने सलाम का जवाब दिया। कहते थे उबैदुल्लाह उस समय पगड़ी और सिर से मुंह लपेटे हुए थे। वहशी केवल उन की आंखें और पांव ही देख सकता था। उबैदुल्लाह ने कहा वहशी क्या मुझे पहचानते हो। कहते हैं उस ने ध्यान से देखा तो उस ने कहा अल्लाह की कसम नहीं। केवल इतना कि मैं जानता हूं कि अदी बिन ख़यार ने एक औरत से शादी की थी जिसे उम्मे किताल बिनत अबी लेस कहते थे। और मक्का में अदी के लिए इस के यहां बच्चा पैदा हुआ और मैं उसे दूध पिलवाया करता था और बच्चा को उठा कर उस की मां के साथ ले जाया करता था। मैंने तुम्हारा पांव देखा है इस से पता चलता है कि वह यही है यह सुन कर उबैदुल्लाह ने अपना मुंह खोल दिया अर्थात उस ने पांव से पहचान लिया। तो फिर उन्होंने कहा कि हज़रत हमज़ा के कत्ल की घटना हमें सुनाओ। उस ने कहा कि हज़रत हमज़ा ने तमीमा बिन अदी बिन ख़यार को बदर के मैदान में कत्ल किया था। मेरे आका जुबैर बिन मुतअम ने मुझ से कहा कि अगर तुम मेरे चाचा के बदला में हमज़ा को कत्ल करो तो तुम आज़ाद हो। उस ने कहा कि जब लोगों ने देखा कि जंग उहद होने वाली है और उनैन उहद की पहाड़ियों में से एक पहाड़ी है। उहद के और उस के मध्य में एक वादी है। मैं भी लोगों के साथ लड़ने के लिए निकला। जब लोग लड़ने के लिए खड़े हुए तो सबा मैदान में निकला और उस ने पुकारा कि क्या कोई मुकाबला करने के लिए मैदान में निकलेगा। यह सुन कर हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुतिलब मैदान में निकले और कहा कि हे सबा क्या तुम अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुकाबला करते हो। यह कह कर हज़रत हमज़ा ने उस पर हमला किया और वह इस प्रकार हो गया जैसे कल का गुज़रा हुआ दिन अर्थात शीघ्र ही उस का काबू पा लिया और समाप्त कर दिया। वहशी कहता है और मैं एक चट्टान में हज़रत हमज़ा के लिए घात में बैठा रहा जब वह मेरे निकट पहुंचे तो मैंने उन के भाला मारा और उस के उन की नाभि के नीचे रख कर ज़ोर से दबाया तो आर पार निकल गया और यही उन की आख़री घड़ी थी। जब लोग लौटे तो मैं भी उन के साथ लौटा और मक्का में ठहरा रहा यहां तक कि जब इस में इस्लाम फैल गया तो मैं वहां से निकल कर तायफ चला गया लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

की तरफ दूत भेजे और मुझ से कहा कि आप दूतों को कुछ नहीं कहते मैं भी उन के साथ हो गया। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुंचा तो आप ने फरमाया कि क्या तुम ही वहशी हो। मैं ने कहा जी आप ने फमराया तुम ने हमज़ा को कत्ल किया था मैंने कहा ठीक बात है जो आप को पहुंची है। आप ने फरमाया कि तुम से हो सके तो मेरे सामने न आया करो। वह कहते हैं कि यह सुन कर मैं वहां से चला गया जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि की वफात पा गए तो मुस्लिमा कज़्ज़ाब ने बग़ावत की। तो मैंने कहा कि मैं मुस्लिमा की तरफ ज़रूर जाऊंगा शायद में इसके कत्ल कर दूं। और इस प्रकार हज़रत हमज़ा के कत्ल का बदला हो जाए। कहते हैं मैं भी लोगों के साथ जंग में निकला फिर जंग का हल जो हुआ वह हुआ मैंने देखा कि एक आदमी दीवार के सुराख़ के साथ टेक लगाए खड़ा है इस तरह मालूम होता है जैसे गहूं के रंग का ऊंठ सिर के बाल बिखरे हुए हैं तो कहते हैं कि मैंने उस को अपना भाला मारा और उस की छातियों को मध्य रख कर जो दबाया तो दोनो कंधों के मध्य से पार हो गया इस के बाद एक अंसारी ने भी इस का गर्दन काटी तो बाद में यह अंजाम इस का हुआ।

(सहीह अलबुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी कत्ल हमज़ा बिन अब्दुल मुतलिब हदीस 4072)

उमैर बिन इस्हाक से मरवी है कि उहद के दिन हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुतलिब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने दो तलवारों से जंग कर रहे थे और कह रहे थे कि मैं असदुल्लाह हूं(अर्थात अल्लाह का शेर) यह कहते हुए कभी आगे जाते और कभी पीछे हटते वह इसी अवस्था में थे कि अचानक पीठ के बल गिरे उन्हें वहशी असवद ने देख लिया था। अबू उसामा ने कहा कि उस ने उन्हें भाला खींच कर मारा और कत्ल कर दिया(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद जिल्द 3 पृष्ठ 8 हमज़ा बिन अब्दुल मुतलिब प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बैरीत 1990 ई) और हज़रत हमज़ा हिजरत नब्वी के बाद 32 वें महीने में जंग उहद में शहीद हुए। आप की आयु उस समय 59 साल थी।(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद जिल्द 3 पृष्ठ 6 हमज़ा बिन अब्दुल मुतलिब प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बैरीत 1990 ई) रिवायत है कि अबू सुफयान के बीवी हिन्द उहद की जंग में लश्करों के साथ आई। उस ने अपने बाप का बदला लेने के लिए जो बदर में हज़रत हमज़ा के हाथों मारा गया था यह नज़र मानी थी कि मुझे अवसर मिले तो मैं हमज़ा का कलेजा चबाऊंगी। जब यह अवस्था हो गई और हज़रत हमज़ा पर मुसीबत आ गई तो मुश्ररेकीन ने वफात हो गए मुसलमानों की लाशों को मुसला कर दिया उन की शक्लें बिगाड़ दीं और उन के हाथ पैर काट दिए। वह हज़रत हमज़ा के जिगर का एक टुकड़ा लाए हिन्दा इसे लेकर चबाती रही कि खा जाए मगर खा न सकी तो अन्त में फैंक दिया। यह घटना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पता चली तो आप ने फरमाया कि अल्लाह ने आग पर हमेशा के लिए हराम कर दिया है कि हमज़ा के गोशत में से कुछ भी चखे।(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद जिल्द 3 पृष्ठ 8 हमज़ा बिन अब्दुल मुतलिब प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई) आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत हमज़ा की लाश के पास आकर जिन भावनाओं का वर्णन किया उस से आप के उच्च स्थान का पता चलता है। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब हज़रत हमज़ा की लाश को देखा तो उन का कलेजा निकाल कर चबाया गया था। इब्ने हश्शाम कहते हैं कि तारीख़ में लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस अवस्था में हज़रत हमज़ा की लाश के पास खड़े हुए तो फरमाने लगे हे हमज़ा तेरी इस मुसीबत जैसी कोई मुसीबत मुझे नहीं पहुंचेगी। मैं ने इस से अधिक भयावह दृश्य आज तक नहीं देखा। फिर आप ने फरमाया जिब्राईल ने आकर मुझे सूचना दी है कि हज़रत हमज़ा को सात आसमानों में अल्लाह और उस के रसूल का शेर लिखा गया है।

(सीरत इब्ने हश्शाम पृष्ठ 395 बाब वकूफुन्नबी अला हमज़ा प्रकाशन दार इब्ने हज़म बैरूत 2009 ई)

हज़रत ज़ुबैर रज़ि अल्लाह तआला अन्हो से रिवायत है कि उहद की जंग के अन्त पर एक औरत सामने से बहुत तेज़ी के साथ आती हुई नज़र आई। करीब था कि वह शहीदों की लाश देख लेती। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस को अच्छा नहीं समझा कि कोई औरत वहां पर आए और उसे देख सके। इसलिए कि लाशों की बहुत बुरी हालत थी। इस लिए फरमाया कि इस औरत को रोको इस औरत को रोको। हज़रत ज़बैर रज़ि अल्लाह तआला अन्हो वर्णन करते हैं कि मैंने ध्यान से देखा कि वह मेरी माता हज़रत सफिया रज़ि अल्लाह तआला अन्हा हैं। अत: मैं उन की तरफ दौड़ता हुआ गया और लाशों के निकट पहुंचने से पहले ही उन को जा लिया। उन्होंने मुझे देख कर मेरे सीने पर मार कर मुझे पीछे धकेल दिया। वह एक मज़बूत औरत थीं और कहने लगीं कि पर हटो मैं तुम्हारी कोई बात नहीं मानूंगी। मैंने निवेदन किया कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप को रोकने के लिए कहा है कि आप इन लाशों को मत देखें। यह सुनते ही वह रुक गईं और अपने पास मौजूद दो कपड़े निकाल पर फरमाया ये दो कपड़े हैं जो मैं अपने भाई के लिए लाई हूं क्योंकि मुझे उन की शहादत की ख़बर मिल चुकी है। तो यह थी इताअत उस ज़माना की अर्थात यह सुनते ही कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है बावजूद ग़म की अवस्था में, बावजूद इस के कि बड़ी जोश की अवस्था में थीं शीघ्र ही अपनी भावनाओं को कन्ट्रोल कर लिया जहां भी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम सुना शीघ्र रुक गईं। यह पूर्ण इताअत है और कहने लगी कि यह कपड़ा लाई हूं अपने भाई के लिए शहादत की ख़बर मुझे मिल चुकी है तुम इन्हें इन कपड़ों में दफन कर देना। जब हज़रत हमज़ा रज़ि अल्लाह तआला को इन दो कपड़ों के साथ दफन करने लगे तो देखा कि इन के साथ ही एक अंसारी शहीद पड़े हुए हैं उन के साथ भी वही व्यवहार किया गया जो हज़त हमज़ा के साथ किया गया था। हमें इस बात पर शर्म महसूस हुई कि हज़रत हमज़ा रज़ि अल्लाह तआला को दो कपड़ों में दफन करें और उस अंसारी को एक भी कपड़ा न मिले इस लिए हम ने यह तय किया कि एक कपड़ा हज़रत हमज़ा रज़ि अल्लाह रज़ि अल्लाह तआला के लिए और दूसरे में दूसरे अंसारी को दफन करें। अंदाज़ा करने पर हमें पता चला कि इन दोनों में से एक अधिक लम्बे कद का था। हम ने कुर्आ अंदाज़ी की और जिस के नाम जो कपड़ा निकल आया उसे

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

दुआ का अभिलाषी

जी.एम. मुहम्मद शरीफ़

जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

उसी कपड़े में दफन कर दिया। (मस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 1 पृष्ठ 452 हदीस 1418 मस्नद ज़ुबैर बिन अवाम प्रकाशन आलेमलि कुतुब बैरूत)हज़रत हमज़ा को एक ही कपड़े में दफन कर दिया गया जब आप का सिर ढांका जाता तो दोनो पैरों से कपड़ा हट जाता और जब चादर पांव की तरफ खींच दी जाती तो आप के चेहरे से कपड़ा हट जाता तो इस पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इन के चेहरा को ढांप दिया जाए और पांव में अज़ख़र या हरमल घास डाल दी जाए। हज़रत हमज़ा और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश जो कि आप के भांजे थे एक ही कब्र में दफन किए गए। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सब से पहले हज़रत हमज़ा की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद जिल्द 1पृष्ठ 6-7 हमज़ा बिन अब्दुल मुतलिब प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई)(मस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 7 पृष्ठ 72 हदीस 21387 मस्नद ज़ुबैर बिन अवाम प्रकाशन आलेमलि कुतुब बैरूत)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद से मरवी है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सब से पहले हज़रत हमज़ा की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई। एक अंसारी सहाबी की नमाज़े जनाज़ा उन के सामने रखी गई और आप ने उस की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई। फिर इस अंसारी की लाश उठा दी गई मगर हज़रत हमज़ा की लाश वहीं रहने दी गई यहां तक कि इस तरह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस दिन हज़रत हमज़ा की नमाज़ा जनाज़ा बाकी दूसरें शहीदों के साथ सत्तर बार पढ़ाई क्योंकि हर बार हज़रत हमज़ा की लाश वहीं पढ़ी रहती थी।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद जिल्द 3 पृष्ठ 11 हमज़ा बिन अब्दुल मुतलिब प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

हज़रत अबु हुरैरा रज़ि अल्लाह तआला अन्हो हज़रत हमज़ा के रिश्तेदारों के साथ अच्छे व्यवहार और सभी नेक कामों में हमेशा आगे रहते थे। इसलिए शहादत के बाद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत हमज़ा के शव को मुखातिब होकर फरमाया अल्लाह तआला की रहमतें तुझ पर हों आप ऐसे थे कि पता नहीं कि ऐसा रिश्तेदारों से व्यवहार करने वाला और नेकियाँ करने वाला कोई और आज के बाद हो। आप पर कोई दु:ख नहीं है। (अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद जिल्द 3 पृष्ठ 9 हमज़ा बिन अब्दुल मुतलिब प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई) आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चाचा और मुसलमानों के इस बहादुर सरदार हज़रत हमज़ा का जनाज़ा जिस असमर्थता और ग़रीबी का अवस्था में हुआ सहाबा प्राय: इसका वर्णन किया करते थे। बाद में अमीरी के दौर में हज़रत ख़बाब रज़ि अल्लाह वह तंगी का ज़माना याद करके कहा करते थे कि हज़रत हमज़ा का कफन एक चादर में हुआ था वह भी पूरी नहीं होती थी इसलिए सिर को ढांक कर पैर पर घास डाल दी गई थी।

(मस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 7 पृष्ठ 71-72 हदीस21387 मस्नद ख़बाब बिन अतअरत आलेमुल कुतुब बैरूत 1998 ई)

इसी तरह हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ की भी इसी प्रकार की घटना है एक बार रोज़े से थे तो इफ्तार के समय विशेष प्रबन्ध से खाना परोसा गया जिसे देखकर उन्हें ग़रीबी का ज़माना याद आ गया। तंगी का ज़माना याद आ गया। कहने लगे कि हमज़ा भी शहीद हुए और वह मुझसे बेहतर थे उन्हें कफन भी मुयस्सर नहीं आ सका था फिर हमारे लिए दुनिया की सुविधा हुई हमें दुनिया से जो मिला और हमें डर है कि कहीं हमारे नेकियों का सवाब हमें जल्दी से न दे दिया गया हो, अर्थात दुनिया में न मिल गया हो। फिर उन्होंने रोना शुरू कर दिया और इतना रोए कि उन्होंने खाना छोड़ दिया।

(सहीह अल्बुख़ारी अलमग़ाज़ी बाब ग़ज़वह अहद हदीस 4045)

ये वे लोग थे जिन से अल्लाह प्रसन्न हुआ और वे अल्लाह तआला से प्रसन्न हुए जो सविधा के समय भी अपने भाइयों को याद किया करते थे। अपनी जो पहले की स्थिति थी उसे सामने रखते थे। अल्लाह तआला ने उन सब के लिए जन्नतों की ख़ुशखबरियां दी हैं। अल्लाह तआला उन सभी के साथ माफी का व्यवहार करे बल्कि स्तर ऊंचा करता चला जाए।

एक रिवायत में यह आता है हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर की रिवायत है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब अहद से लौटे तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सुना कि अंसार की महिलाएं अपने पतियों पर रोती हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया " क्या बात है हमज़ा पर कोई रोने वाला नहीं ?" अंसार की महिलाओं को पता चला कि वह हमज़ा की शहादत पर रोने के लिए इकट्ठा हो गईं । फिर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आँख लग गई जब जागे तो देखा कि वे महिलाएं इस तरह रो रही थीं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि आज हमज़ा का नाम लेकर रोती ही रहेंगी उन्हें कह दो कि अपने घरों को लौट जाएं। तब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें हिदायत फ़रमाई कि वे अपने घरों को लौट जाएं और आज के बाद किसी मरे हुओं का शोक मत करें और रोना न करें।

(मस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 2 पृष्ठ 418-419 हदीस 21387 मस्नद ख़बाब बिन अतअरत आलेमुल कुतुब बैरूत 1998 ई)

अत: इस तरह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुर्दों पर रोना अवैध करार दे दिया और किसी भी प्रकार का रोना है और क्रंदन समाप्त कर दिया। बहुत ज्ञान से आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अंसार की महिलाओं की भावनाओं का ध्यान रखा। उन्हें अपने खानदानों और भाइयों की वफात होने पर शोक से रोकने की बजाय हज़रत हमज़ा की तरफ उनका ध्यान फेरा। और हज़रत हमज़ा की तरफ ध्यान फिराया जिस का सब से अधिक सदमा आप को था और फिर हज़रत हमज़ा पर रोने धोने के बारे में नसीहत फरमा कर अपना नमूना प्रस्तुत कर दिया और उन्हें धैर्य की नसीहत की। जहां तक आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत हमज़ा की जुदाई का ग़म था और संबन्ध था वह अन्त तक आप को रहा।

कअब बिन मालिक ने हज़रत हमज़ा की वफात पर आप के मर्सिया में कहा था कि मेरी आंखें आंसू बहाती हैं और हमज़ा की मौत पर उन्हें रोने का ठीक ही अधिकार भी है लेकिन ख़ुदा के शेर की मौत पर रोने-पीटने और चीख़-पुकार करवाने से क्या प्राप्त हो सकता है वह ख़ुदा का शेर हमज़ा के जिस सुबह वह शहीद हुआ और दुनिया ने कहा कि शहीद तो यह जवान हुआ।

(असदुल ग़ाबा जिल्द 2 पृष्ठ 69 हमज़ा बिन अब्दुल मुतलिब प्रकाशन दारुल कुतुब अलइलमिया बैरूत)

अल्लाह तआला इन सहाबा के स्तर को बढ़ाता चला जाए और उन्होंने अपनी कुरबानियों के जो उदाहरण स्थापित किए हैं वह रहती दुनिया तक मुसलमान याद रखें और उन्होंने जो आदर्श और नेकियाँ की हैं। जो उस्वा स्थापित किया है और जो नेकियाँ हमें कर के दिखाई हैं उन्हें करने की क्षमता भी प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

अपनी औलाद की नेक तरबियत पर विशेष ध्यान दें।

उपदेश सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहु-ल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़

अपनी औलाद की नेक तरबियत पर विशेष रूप से ध्यान दें। उन को नेक नमूना पेश करें। अभी कुछ दिनों तक इन्शा अल्लाह रमज़ान का बरकतों वाला महीना शुरू होने वाला है। यह नेकी और रूहानी तरबियत का सर्वोत्तम मार्ग है। इस में इबादत और नेक कामों का अभ्यास होता है। जिन पर रोज़े फर्ज़ हैं उन्हें कोई बहाना नहीं वे रोज़े रखें। फर्ज़ नमाज़ों और नफल का प्रबन्ध करें और दुआओँ पर ज़ोर दें। कुरआन करीम की अधिक से अधिक तिलावत करें। बच्चों से कुरआन करीम का पूर्ण दौर करवाएं। और फिर इन नेक बातों को रमज़ान के बाद भी जारी रखें। अल्लाह तआला आप सब को अनुकरण करने की तौफीक प्रदान करें।

(अख़बार बदर उर्दू कादियान 8 दिसम्बर 2016 ई पृष्ठ 2)

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पृष्ठ 2 का शेष

फरमाए और मुशकिलों को दूर फरमाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने अमीर साहिब यूगेण्डा से फरमाया के दफतर के मामलों के बारे में आप की मुलाकात अलग हो जाएगी।

यूगेण्डा के इस वफद की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात 1 बज कर पांच मिन्ट तक जारी रही। इस के बाद वफद के मेम्बरों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

जिम्बावे का वफद

इस के बाद जिम्बावे से आने वाले जमाअत के सदर आदरणीय यूसुफ अनूबी साहिब ने मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। यूसुफ अनूबी साहिब जिम्बावे से पहली बार जलसा सालना में शामिल हुए थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर यूसुफ अनूबी साहिब ने बताया कि जिम्बावे में जमाअत अहमदिया की संख्या धीरे धीरे बढ़ रही है हमारे सदस्यों की संख्या लगभग तीन हज़ार होगी जिन में से दो हज़ार सक्रिय सदस्य हैं।

वसीयत की समीक्षा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि आप पहले अपनी वसीयत करें फिर दूसरों की तरफ ध्यान दें। आप ने यहा आकर जमाअत का सारा सिस्टम देख लिया है अब वापस जाकर मेहनत से काम करें और वहां भी इसी तरह जमाअत का निज़ाम मज़बूत बुनियादों पर स्थापित करें।

महोदय ने बताया कि उन्होंने जलसा में आकर बहुत कुछ सीखा है पहली बार जलसा में शामिल हुए हैं जलसा की हाज़री और सारा प्रबन्ध देखकर बहुत हैरानी हुई।

महोदय की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ से यह मुलाकात 1 बजकर 15 मिन्ट तक जारी रही। अन्त में महोदय ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

घाना का वफद

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ महमूद हाल में पधारे जहां घाना से आए हुए वफद ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। घाना से इस बार 26 लोगों पर आधारित वफद आया था। वफद के सदस्यों ने बारी बारी अपना परिचय करवाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने हिदायत फरमाई कि सदर लजना इमाउल्लाह को कहें कि वह अपनी तजनीद पूर्ण करें। और देश के सारे क्षेत्रों से अपनी तजनीद को पूरा करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने सदस्यों से घाना के विभिन्न क्षेत्रों और वहां के कामों के बारे में पूछा और कुछ जमाअत के लोगों और दूसरी बातें पूछीं।

अन्त में वफद के सदस्यों ने बारी बारी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए छात्रों तथा छात्राओं के कलम दिए और बच्चों तथा बच्चियों को चाकलेट प्रदान की।

घाना के इस वफद की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात 1 बजकर 35 मिन्ट तक जारी रही।

अफ्रीकन देशों के अहमदिया रकीम प्रैस के काम करने वालों की सामूहिक मुलाकात

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय पधारे आए जहां कार्यक्रम के अनुसार अफ्रीकी देशों के अहमदिया रकीम प्रेस में सेवा प्रदर्शन करने वाले मुबल्लिग़ों और कार्यकर्ताओं की सामूहिक मुलाकात थी।

इस साल जलसा सालाना पर घाना, आइवरी कोस्ट, बोर्कीनाफ़ासो, जाम्बिया, सिएरा लियोन, केन्या, तंजानिया और बेनिन के अहमदिया प्रेस के प्रतिनिधि आए थे। हर एक ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ की सेवा में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की।

घाना के प्रतिनिधि ने कहा कि इस वर्ष उन्होंने घाना की मूल भाषा में कुरआन का अनुवाद प्रकाशित किया है।

इसी तरह, अन्य देशों ने उनके प्रेस में प्रकाशित रिपोर्ट और इस मुद्दे से संबंधित अन्य बातें वर्णन कीं।

अल्लाह तआला के फज़ल से रसाला रियू यू आफ रिलीजनेस का फ्रांसीसी संस्करण और रसाला अत्तकवा अफ्रीकी देशों के लिए फ्रेंच देशों की प्रेस में प्रकाशित हुआ है।

कुछ देशों ने अपने प्रेस का विस्तार करने के लिए अधिक मशीनरी की आवश्यकता का उल्लेख किया है, लेकिन हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने कहा: यदि आप अपने संसाधनों के माध्यम से इसे प्राप्त कर सकते हैं, तो करें।

प्रेस प्रतिनिधियों की यह मुलाकात 1 बजकर 45 मिनट तक जारी रही। बाद में, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फज़ल में आकर नमाज़ जुहर तथा असर जमा कर के पढ़ाई ।

केंद्रीय प्रतिनिधियों के सम्मान में दोपहर का खाना

विभिन्न देशों में शामिल होने वाले केंद्रीय प्रतिनिधियों के सम्मान में जमाअत अहमदिया यूके द्वारा दोपहर के खाने में सहभागिता।

*आज जमाअत अहमदिया यूके की तरफ से दुनिया के विभिन्न देशों से जलसा सालाना में शामिल होने वाले केन्द्रीय प्रतिनिधि के सम्मान में खाने का प्रोग्राम रखा गया जिसका प्रबन्ध केंद्रीय गेस्ट हाउसज़ के पीछे लगाई गई मार्की में किया गया। इसमें कदियान और रब्बवा के सभी केंद्रीय प्रतिनिधि, दुनिया के अन्य देशों से आने वाले अमीरों, राष्ट्रीय सदरों, मुबल्लिग़ों और अन्य प्रमुख अधिकारी शामिल थे।

नमाज़ों को अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ इस मार्की में तशरीफ़ लाए और सभी मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ की साथ भोजन करने का सौभाग्य प्राप्त किया। अंत में,हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई और अपने निवास में पधारे।

कनाडा से आने वाले ख़ुद्दाम की सामूहिक मुलाकात

कार्यक्रम के अनुसार 4 बजकर 45 मिन्ट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ महमूद हॉल तशरीफ़ लाए जहां कनाडा से आने वाले 365 ख़ुद्दाम ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया और तस्वीर बनवाने की सआदत पाई।

कनाडा से 365 ख़ुद्दाम के इस वफद ब्रिटेन में 25 जुलाई से 6 अगस्त, 2017 ई तक रहा। इन सभी ख़ुद्दाम ने जलसा सालाना में भाग लिया और वक्फे आरज़ी के कार्यक्रम के अधीन सामान क्लोज़ करने की ड्यूटी दी। कनाडा से ख़ुद्दामुल अहमदिया का यह प्रतिनिधिमंडल एक चार्टर्ड विमान बुक करवाकर लंदन पहुंचा था। कनाडा एक विशाल देश है जिसे 12 क्षेत्रों में बांटा गया है। इस समूह में प्रत्येक क्षेत्र के सदस्य शामिल थे यात्रा के दौरान, प्रतिनिधिमंडल के सभी सदस्यों को जहाज़ में जमाअत के साथ नमाज़ अदा करने की तौफीक़ प्राप्त हुई, जो सोशल मीडिया पर लाखों लोगों द्वारा देखा गया था।

व्यक्तिगत और परिवार की मुलाकातें

तस्वीर के प्रोग्राम के बाद,हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय पधारे, जहां परिवार की मुलाकातों के कार्यक्रम शुरू हुए। आज 29 परिवारों के 145 लोग और इस के अतिरिक्त 37 अन्य लोगों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात की। इस तरह कुल 182 लोगों ने मुलाकात की।

मुलाकात करने वाले यह परिवार निम्न 28 देशों से आए थे। पाकिस्तान, अमेरिका, स्पेन, कनाडा, सऊदी अरब, तंज़ानिया, डेनमार्क, नॉर्वे, नाइजीरिया, अबू धाबी, यूके, भारत, जर्मनी, नीदरलैंड, कनाडा, इटली, बांग्लादेश, घाना, फिलीपींस, स्वीडन, इंडोनेशिया, यूगांडा, ग्रीस, कतर, आइवरी कोस्ट, मॉरीशस, आयरलैंड और बेनिन

उनमें से प्रत्येक अपने आक़ा के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों तथा छात्राओं को कलम प्रदान किए। और छोटी आयु के बच्चों तथा बच्चियों को चाकलेट प्रदान कीं।

मुलाकातों का यह कार्यक्रम आधी रात तक जारी रहा। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फज़ल में तशरीफ लाकर नमाज़ मग़रिब और इशा पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला

बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने निवास में पधारे।

(6 अगस्त 2017 रविवार)

जलसा सालाना के अवसर पर जहां विभिन्न देशों से आने वाले प्रतिनिधि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य पाते हैं वहाँ उन देशों से आने उमरा, नेशनल सदर और मुबल्लिग़ इन्चार्ज साहिबान और अन्य जमाअत के पदाधिकारी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ दफतर की मुलाकात का सौभाग्य पाते हैं और अपनी इन मुलाकातों में अगले साल के कार्यक्रम, मिशनरी और प्रशिक्षण योजनाएं, मस्जिदों, मिशन हाउसों के निर्माण और अपने देश के अन्य परियोजनाएं और विविध मामलों को प्रस्तुत करके हिदायत पाते हैं।

आज, इस कार्यक्रम के अनुसार कुछ वरिष्ठ अधिकारियों और मुबल्लिग़ों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात की। मुलाकातों का यह कार्यक्रम लगभग 10:00 पूर्वाह्न से शुरू हुआ।

सबसे पहले, अब्दुल्ला दीबा साहिब (मुबल्लिग़ सिलसिला, अमेरिका) ने ज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। महोदय गैम्बिया के हैं और साल 2015 ई में जामिया अहमदिया यू.के से शाहिद की परीक्षा पास कर के। उनकी नियुक्ति अमेरिका में हुई थी। महोदय गैम्बिया से संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए सीधे चले गए और अब संयुक्त राज्य अमेरिका से जलसा सालाना में भाग लेने के लिए आए थे। संयुक्त राज्य अमेरिका में, उन्होंने अपने काम और दूसरी बातों के बार में हिदायत प्राप्त की और उनकी मुलाकात 10 बज कर और 50 मिनट तक जारी रही।

* इस के बाद आदरणीय अमीर जमाअत अहमदिया कबाबीर ने मुलाकात का सम्मान पाया। अमीर साहिब ने एम.टी.ए अल-अरबिया अरबी के कार्यक्रमों और अल-हवारुल मुबाशिर के कार्यक्रम के बार में मार्गदर्शन प्राप्त किया और अगले प्रोग्रामों के बारे में अपना प्रोग्राम पेश किया।

* इस के बाद अमीर साहिब डेनमार्क ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य पाया और डेनमार्क जमाअत के हवाले से विभिन्न मामलों को प्रस्तुत करके निर्देश हासिल किया। अमीर साहिब डेनमार्क ने कहा कि आज मीडिया में समलैंगिक सेक्स के बारे में बहुत सारे सवाल किए जाते हैं और जब इन सवालों का जवाब दिया जाता है तो इन सावलों के उत्तर तोड़ मरोड़ कर अपने अर्थ निकाल कर प्रकाशित करते हैं। उनको किस प्रकार जवाब दिया जा सकता है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने कहा: आप को कहना चाहिए कि मैं एक धार्मिक मंत्री हूँ। मैंने अपनी धार्मिक शिक्षा के अनुसार उत्तर देना होगा और मेरे धर्म की पुस्तक के मुताबिक कुरआन में समलैंगिक विवाह को मान्यता नहीं है। न केवल कुरआन में, इस की अनुमति नहीं देता बल्कि बाइबिल की शिक्षा भी इसके ख़िलाफ है, और बाइबिल भी इस को जायज़ नहीं कहती। बाकी जहाँ तक सज़ा का संबंध है, लूत अलैहिस्सालम की क़ौम को एक राष्ट्रीय और औपचारिक बुराई के कारण अल्लाह तआला द्वारा दंडित किया गया था।

इसके बाद, सैयद अहमद याह्या साहिब (अध्यक्ष ह्यूमेनटी फर्सट यूके) ने मुलाकात की और निर्देश प्राप्त किए और ह्यूमेनटी फर्सट के बारे में विभिन्न योजनाएं और मामलों को प्रस्तुत किया। हीयूमेन्टी फर्सट पिछले 23 साल से मानवता की सेवा में व्यस्त है और अब ख़ुदा तआला के फज़ल से दुनिया के 52 देशों में पंजीकृत हो चुकी है। ह्यूमेनटी फर्सट इंग्लैंड अलावा ह्यूमेनटी फर्सट जर्मनी, अमेरिका और कनाडा भी दुनिया के विभिन्न देशों में असाधारण सेवा की तौफीक पा रही है। इन चार देशों के ह्यूमेन्टी फर्सट के ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ से सीधा मार्ग दर्शन प्राप्त कर बहुत बड़े स्तर पर पीड़ितों और ग़रीबों की मदद की है। पिछले एक वर्ष के दौरान 18 देशों में 73 हजार 636 पीड़ितों की प्राकृतिक आपदाओं और गृहयुद्ध में मदद की गई। इन को खाने पीने का सामान, चिकित्सा सहायता और शेल्टर आदि प्रदान किया गया। इसी तरह हैती में तूफान, इक्वाडोर में भूकंप, पूर्वी अफ्रीका में अकाल, जापान में भूकंप, सीरिया में गृहयुद्ध, फलनट वाटर क्राइसिस यू.एस.ए, बिहार भारत में बाढ़, नाइजीरिया और कैमरून में IDPs और विभिन्न देशों में शरणार्थियों की मदद भी प्रदान की गई कुल मिलाकर 2 मिलियन 63 हजार 76 ज़रूरत मंदों तथा बेघर लोगों को भोजन और अन्य बुनियादी जरूरतों का आयोजन किया गया था।

जल योजना के तहत, 2540 पानी के पंप अब तक लगाए जा चुके हैं, जिसने 3.8 लाख लोगों ने इस्तेमाल किया है। जीवन योजना के तहत, ह्यूमेनटी फर्सट अफ्रीकी देशों में 22 स्कूल चला रही है। इसके अलावा, नाइजर, माली और टोगो में और विद्यालय बनाए गए हैं। इस तरह, 28 व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र चल रहे हैं। इन 68 संस्थानों के कुल 68 हज़ार 117 लोगों ने उपयोग किया गया। जॉर्डन भी जॉर्डन में तीन साल से सीरिया के बच्चों के लिए शैक्षिक परियोजनाओं का संचालन कर रहा है। अब तक गिफ्ट ऑफ़ साइट योजना के तहत हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के निर्देश में 16 हज़ार 665 ऑपरेशन किए गए हैं। इसके अलावा, वर्ष में दौरान 54,000 लोगों को चिकित्सा सुविधाएं मुहैया कराई गई थीं, जिसमें नि: शुल्क आपरेशन भी शामिल थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने ग्वाटेमाला में गरीब लोगों की सेवा के लिए एक अस्पताल की स्थापना को मंजूरी दे दी है। ह्यूमेन्टी फ़र्स्ट ने सबसे पहले अमेरिका में 22 बेडरूम वाले बड़े अस्पताल का निर्माण कर रहा है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने इस का नाम नासिर अस्पताल रखने का सुझाव दिया है। इसके अलावा, सेनेगल, युगांडा, टोगो, इंडोनेशिया और आइवरी कोस्ट भी अस्पताल की परियोजनाएं है मानवता फस्ट के अधीन विभिन्न देशों में खाद्य और सब्जियों के बैंक स्थापित किए गए है है, जिसके माध्यम से वर्ष भर में 60 हज़ार से अधिक ज़रूरतमंद लोगों को भोजन प्रदान किया जाता है।

* इस के बाद मॉरीशस के मुबल्लिग़ इन्चार्ज साहिब ने हुज़ूर अनवर से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर ने हिदायत देते हुए फरमाया मुरब्बियों को चाहिए कि वे ख़ुद अपने सम्मान बनाएं। विभिन्न विभागों के सक्रेटरी जो भी प्रोग्राम बनाते हैं उन का नियमित वार्षिक कैलेंडर होना चाहिए। मुरब्बियों को पता होना चाहिए कि कौन कौन से प्रोग्राम हैं और किस प्रोग्राम में उन्होंने शामिल होना है। इसी तरह आप की जो भी मस्जिदें और नमाज़ सेंटर हैं वे पांचों नमाज़ों के लिए खुलने चाहिए। इस का नियमित प्रबन्ध होना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जो भी प्रशिक्षण issues हैं, उनके विषय में सचिव प्रशिक्षण से संपर्क करें और उनके साथ जमाअत के मित्रों को लेकर प्रशिक्षण कार्यक्रम बनाएँ। यह मुबल्लिगों का काम है कि परिणाम पैदा कर के दिखाएं। आप ने तब्लीग़ के काम करने हैं किस प्रकार करने हैं ये आप के काम हैं। हालात को सामने रखते हुए अपने प्रोग्राम बनाएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया जब आप ने दो ख़ानदानों के मध्य में सुलह करवानी है उन के झगड़ा निपटाने हैं तो फिर आप ने किसी पक्ष की पार्टी नहीं बनना। किसी का पक्ष नहीं लेना। किसी एक घर से चाय नहीं पीनी और खाना नहीं खाना वरना एक पक्ष के साथ होने का आरोप लग जाएगा। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया जो भी जमाअत के अहदेदार हैं उन के साथ मिल कर बैठें और जो भी मुशकिलों सामने हैं उन का हल निकालें। हिक्मत के साथ काम करें और जो भी वहां ज़रूरत है इस के बारे में वहां के सम्बन्धित विभागों से सम्पर्क करें।

* इस के बाद कार्यक्रम के अनुसार, अमीर जमाअत अहमदिया ऑस्ट्रेलिया को मुलाकात का अवसर मिला। अमीर साहिब ऑस्ट्रेलिया ने सिडनी और सिडनी में जमाअत के केंद्रीय केंद्र और मस्जिद के साथ जुड़े मस्त्ररूर गेस्ट हाउस के निर्माण के बारे में नई योजना और कार्यक्रम पेश करके निर्देश लिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने अपने ऑस्ट्रेलियाई सफर के दौरान 16 अक्तूबर, 2013 ई को इस की नींव रखी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने आप को हिदायत फरमाई के आप को स्थानीय खर्च के साथ इस घर का निर्माण करना है।

सिडनी शहर के आसपास के क्षेत्र में जमाअत का केंद्र और मस्जिद बैयतुल हुदा एक खुली ज़मीन पर स्थित है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आप के पास ज़मीन का एक बड़ा हिस्सा ख़ाली पड़ा हुआ है। वहाँ जगह देकर एक जगह रखकर एक घर का क्षेत्र बनाएं। इस प्रकार अहमदी मस्जिद के निकट आबाद हो जाऐंगे। एक भाग पांच सात एकड़ विभाजित करके इसे आवासीय क्षेत्र बनाए। सरकार के संबंधित विभाग से बात करें और उसे आवासीय क्षेत्र में ले जाने का प्रयास करें। इस तरह, आप 30 चालीस घर बना सकते हैं। यदि आप कोशिश करके करवा सकते हैं सकते हैं, तो फिर प्रयास करें। यदि लोगों को मस्जिद के साथ बसाया जाता है तो इस से मस्जिद की आबादी भी हो जाएगा। इन घरों के आने जाने के रास्ते पूरी तरह से अलग हों शेष दफतर आदि आप ने जहाँ भी बनाने हैं बनाएं । हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने

फरमाया: स्थानीय आर्किटेक्ट को जोड़ें । स्थानीय आर्किटेक्ट्स को रखने से यह एक सुविधा है कि वे कभी-कभी विभागों से स्वयं अनुमोदन लेते हैं और स्वयं कोशिश करते हैं।

कैनबरा (Canberra) में मस्जिद की स्थापना के संदर्भ भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने कुछ प्रशासनिक निर्देश दिए। इसी प्रकार कहा कि निर्दिष्ट समय जो निर्माण के लिए दिया जाता है अगर इस समय के अंदर निर्माण शुरू हो तो निर्माण के पूरा होने तक विस्तार हो जाता है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि यहाँ की मस्जिद भी अपने संसाधनों से बनानी है। नि-संदेह इसे विभिन्न Phases में बना लें लेकिन अपने sources से ही बनानी है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया सारी योजना अपनी कार्यकारिणी में रखें और फिर समीक्षा और विभिन्न चरणों के रूप में इसे निर्माण करें।

इसके बाद, जमैका के मुबल्लिग़ ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। मुबल्लिग़ प्रभारी साहिब ने बताया कि जमैका से जलसा सालाना का जो प्रतिनिधिमंडल आया था उनमें चीफ पत्रकार थे उन्होंने वापस जाकर जमैका में जलसा सालाना के संदर्भ में कवरेज दी है और अखबारों में बड़ा अच्छा लेख प्रकाशित हुआ। इसी प्रकार उन्होंने एक घंटे की वृत्ततस्वीर भी बनाई है।

मुबल्लिग़ ने कहा कि गरीब लोग मस्जिद के आस-पास के क्षेत्रों में रहते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, ईद आदि के अवसर पर उनकी सहायता किया करें। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जैमिका के लोग प्रकृति के कठोर हैं। यहां, ब्रिटेन में, इन लोगों ने जमाअत अहमदिया को स्वीकार किया है तो इन में बदलाव हुए हैं और अब यही तब्लीग़ कर रहे हैं और तब्लीग़ में तेज़ हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने ईसाइयों में तब्लीग़ के संदर्भ में कहा, इन में हिक्मत के साथ ब्लीग़ करें। इन ईसाइयों के नेतृत्व को बुलाए और उनके साथ मुलाकातें करें उन के साथ धर्म के संबंध में चर्चा करें।

मुबल्लिग़ इन्चार्ज साहिब जमैका ने अधिक मुबल्लिग़ों को भिजवाने का अनुरोध किया उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अगले साल जब स्नातक मुबल्लिग़ों की नियुक्तियों हों तब मद्देनजर रखेंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, आप वहां होम्यो क्लीनिक खोलें। क्लिनिक और प्राथमिक विद्यालय के बारे अपना कार्यक्रम भेजकर नियमित समीक्षा करें।

महोदय ने कहा कि हमें किंग्स्टन शहर में एक जमाअत के केंद्र की आवश्यकता है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: सारी समीक्षा कर के अपनी रिपोर्ट भिजवाएं।

नए अहमदियों की तरबयित के हवाले से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया सारे नए अहमदियों को सूरत फातिहा याद करवाएं। अमरीका कैनेडा से कहें कि ख़ुद्दाम वहां जा कर वक्फे आरज़ी करें और नए अहमदियों को सिखाएं।

ग़रीबों की मदद के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, पैसे देने के बजाय खाद्य वस्तुएं दे कर उन की सहायता कर दिया करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जमैका में जमाअत की स्थापना के आधार पर जमाअत अभी प्रारंभिक चरण में है। समस्याएं हैं लेकिन आपको जैसा भी हो इन समस्याओं से छुटकारा पाना होगा। बुद्धि के साथ काम करते रहें और दुआएं भी करते रहें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अपने सार्वजनिक संबंधों को बढ़ाएं। मिनस्टरज़, सांसदों, पुलिस आयुक्तों, पार्षदों, महापौरों, अन्य अधिकारियों और अन्य पढ़े लिखे वर्गों के साथ सम्बन्ध बनाएं और कुछ विशेष अवसर होते हैं समारोहों होते हैं उनमें ऐसे लोगों को आमंत्रित करें। उनके साथ संपर्क रखें, रिश्ते को बढ़ाएं ईद के अवसर पर प्रोग्राम रख लिया करें और उन्हें आमंत्रित करें। उसी तरह, नया साल, आदि या जो भी अन्य अवसर हैं, उन्हें कुछ उपहार दें। आपके सार्वजनिक सम्बन्ध अच्छे होना चाहिए

इसके बाद, मिस्र की जमाअत के सदर ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया सदर साहिब ने विभिन्न मामलों में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की सेवा में पेश करके कुछ प्रशासनिक निर्देश लिए। कुछ प्रशिक्षकों ने छात्रों की शैक्षिक लागत और ग़रीबी में मदद के बारे में भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने निर्देश दिए । हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि Law of the Land के अनुसार जो भी काम कर सकते हैं वह करें। आप जो भी सेवा कर सकते हैं करें इसी तरह चैरेटी के भी सहायता करें, इसी तरह ग़रीबों के लिए भी कुछ न कुछ दें।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने दो बजे मस्जिद फज़ल में पधार कर नमाज़े ज़ोहर व अस्र जमा करके पढ़ाई।

*आज पैन अफ्रीकी अहमदिया मुस्लिम एसोसिएशन (PAAMA) द्वारा दुनिया के विभिन्न देशों से जलसा सालाना में शामिल होने वाले केन्द्रीय प्रतिनिधि के सम्मान में भोज दिया गया जिसका प्रबन्ध केंद्रीय गेस्ट हाउसज़ के पीछे लगाई गई मार्की में किया गया। इसमें कादियान, रबवा से आने वाले सभी केन्द्रीय प्रतिनिधि, अफ्रीकी देशों से आने वाले सभी मेहमान और दुनिया के अन्य देशों से आने वाले अमीरों, नेशनल सदर, मुबल्लिग़ किराम और अन्य जमाअत के उहदेदार शामिल थे। 1986 ई में पैन अफ्रीकी संगठन की शुरूआत, हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला ने ब्रिटेन में की थी। उनके पहले सदर, हाजी अजमल, इस्माइल बी के आड़ साहिब थे। इन क बाद में 2009 ई में ईसा अहमद वीमा साहिब को सदर के रूप में चुना गया था। और 2014 के बाद से, टॉमी काहलों साहिब सदर पेन अफ्रीकन सेवा कर रहे हैं। इस समय इसके सदस्य 1001 हैं।

इस संगठन का उद्देश्य अफ्रीका के अहमदियों को एक ध्वज के तहत संगठित करना और उन का जमाअत के साथ मजबूत संबंध स्थापित करना है। ताकि ये लोग आगे चल कर इस्लाम, समाज और अफ्रीका की सही रंग में सेवा कर सकें। इसी प्रकार, यह संगठन विभिन्न देशों के अफ्रीकी अहमदियों को चर्चा करने के लिए एक मंच प्रदान करती है। यह संगठन अपने सदस्यों की नैतिक, शैक्षिक और सामाजिक स्थिति में सुधार करने और उसके सदस्यों में आपसी भाईचारे को बढ़ाने वाले कार्यक्रमों का संचालन करने का प्रयास करता है। जमाअत अहमदिया के माटो मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी से नहीं इस संगठन की रणनीति है। पैन अफ्रीकी अहमदिया मुस्लिम एसोसिएशन यू.के, जलसा सालाना यूके के अवसर पर एक कार्यक्रम भी आयोजित करती है जिस में अफ्रीकी देशों के अमीर अपने अपने देशों ने जमाअत की तरक्की के बारे में परिचय करवाया। यह संगठन अफ्रीका में मस्जिदों की स्थापना के संदर्भ में भी सेवा की। इस संगठन द्वारा बेनिन और बोर्कीनाफ़ासो में मस्जिदों का निर्माण हो चुका है। पैन अफ्रीकी अहमदिया मुस्लिम एसोसिएशन द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम के अवसर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की स्वीकृति से आदरणीय मौलाना अब्दुल वहाब आदम साहिब (स्वर्गीय) की याद में असाधारण सेवा करने वाले अफ्रीका के मुबल्लिग़ और वाक्फे ज़िन्दगी को "अब्दुल वहाब आदम अवार्ड" दिया जाता है इसी तरह अफ्रीका में असाधारण सेवा करने वाले ग़ैर अफ्रीकी मुबल्लिग़ों तथा वाक्फीन ज़न्दगी को मौलाना अब्दुल रहीम नय्यर अवार्ड दिया जाता है। (हज़रत मौलाना अब्दुर्रहीम नय्यर साहिब रज़ि अल्लाह तआला अन्हो) अफ्रीका में भिजवाए जाने वाले सब से पहले मुबल्लिग़ थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ इस कार्यक्रम के दौरान अपने मुबारक हाथों से करूणा करते हुए यह पुरस्कार प्रदान फरमाए।

नमाज़ ज़ुहर असर के अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ इस मार्की में पधारे। सदर साहिब पैन अफ्रीकी अहमदिया मुस्लिम एसोसिएशन ने संक्षिप्त परिचय के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की सेवा में आवेदन किया कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ वर्ष 2017 ई में चुने जाने वाले मुबल्लिग़ों किराम और वाकफ़ीन ज़िन्दगी को पुरस्कार दें। इसलिए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने करूणा करते हुए मुहम्मद अली कॉयर साहिब (अमीर मुबल्लिग़ प्रभारी यूगांडा), अब्दुल ग़नी जहांगीर साहिब (प्रभारी फ्रेंच डेस्क) और हाफिज एहसान सिकंदर साहिब (मुबल्लिग़ प्रभारी बेल्जियम) को "वहाब आदम पुरस्कार" प्रदान किया और इनायतुल्लाह

ज़ाहिद साहिब (पूर्व मुबल्लिग़ जाम्बिया, यूगांडा और घाना), बशीर अख़्तर साहिब (पूर्व शिक्षक मजलिस नुसरत जहां सिएरा लियोन) और मुहम्मद फज़ल बाजवा साहिब (पूर्व अमीर मुबल्लिग़ प्रभारी लाइबेरिया) को "अब्दुल रहीम नय्यर साहिब" पुरस्कार से सम्मानित किया।

पुरस्कारों की यह योजना वर्ष 2014 ई से शुरू हो चुकी है। वर्ष 2014 ई में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने मुहम्मद बिन सालेह साहिब (अमीर तथा मिशनरी प्रभारी जमाअत घाना), अज़हर हनीफ साहिब (मुबल्लिग़ प्रभारी अमेरिका),आदरणीय इब्राहिम बिन याकूब साहिब (अमीर मुबल्लिग़ प्रभारी त्रिनिदाद एंड टोबैगो), बकरी उबैद कलोटा साहिब (मुबल्लिग़ सिलसिला तंज़ानिया) और अब्दुल गफ्फार साहिब (मुबल्लिग़ सिलसिला यूके) को "वहाब आदम पुरस्कार " से सम्मानित किया था, इसी तरह वर्ष 2015 ई में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने अब्दुल रशीद सानी साहिब (मुबल्लिग़ नाइजीरिया), ज़करुल्लाह तायो अय्यब साहिब (मुबल्लिग़ नाइजीरिया) और आदरणीय उम्र मुआज़ Coulibaly साहिब (मुबल्लिग़ माली) को "वहाब आदम" पुरस्कार और मुबारक अहमद नज़ीर साहिब (पूर्व मुबल्लिग़ सिएरा लियोन), महमूद नासिर साक़िब साहिब (अमीर जमाअत बोर्कीनाफ़ासो), सईदुर्ररहमान साहिब (अमीर जमाअत सिएरा लियोन), ताहिर महमूद साहिब (अमीर जमाअत तंज़ानिया) और अब्दुल खालिक नय्यर साहिब (मुबल्लिग़ प्रभारी कैमरून) को "अब्दुल रहीम नय्यर" पुरस्कार प्रदान किए। वर्ष 2016 में आदरणीय उस्मान कम्बालाया साहिब (मुबल्लिग़ तंजानिया), यूसुफ याउसन साहिब (उप अमीर मुबल्लिग़ घाना) और अब्दुल्ला जुम्अ: साहिब (मुबल्लिग़ केन्या) ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के दस्ते मुबारक से "वहाब आदम पुरस्कार" प्राप्त किए थे और दाऊद हनीफ साहिब (पूर्व अमीर मुबल्लिग़ प्रभारी जाम्बिया, हाल मुबल्लिग़ अमेरिका), मुनीर अहमद ख़ुर्शीद (पूर्व अमीर मुबल्लिग़ प्रभारी गाम्बिया) और आदरणीय ख़लील अहमद मुबल्लिग़ साहिब (पूर्व अमीर मुबल्लिग़ प्रभारी सिएरा लियोन और हाल मुबल्लिग़ प्रभारी कनाडा) ने अब्दुल रहीम नैय्यर पुरस्कार लेने का सौभाग्य प्राप्त किया।

पुरस्कार समारोह के बाद मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के साथ भोजन की सआदत हासिल की। खाने के बाद विभिन्न अफ्रीकी समूह ने अपने विशिष्ट शैली में तराने पेश किया। अंत में, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई और अपने निवास में पधारे।

व्यक्तिगत और पारिवारिक मुलाकात

व्यक्तिगत और पारिवारिक मुलाकात

कार्यक्रम के अनुसार आज शाम सवा पांच बजे विभिन्न देशों से आने वाले जमाअत के मित्रों और परिवार का हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से मुलाकात शुरू हुईं। आज 43 परिवारों के 155 लोगों और इसके अलावा 30 मित्रों ने व्यक्तिगत रूप से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से मुलाकात की सआदत पाई। इस प्रकार 185 लोगों ने हुज़ूर से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया।

मुलाकात करने वाले यह परिवार निम्नलिखित 26 देशों से आए थे। पाकस्तान, अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, नॉर्वे, दुबई, अबू धाबी, यूके, भारत, जर्मनी, बांग्लादेश, मस्कट, घाना, बोर्कीनाफ़ासो, डेनमार्क, स्वीडन, कतर, ऑस्ट्रिया , बैलजियम, टोगो, लाइबेरिया, साउथ अफ्रीका, माइक्रोनेशिया, जाम्बिया, यूगांडा और स्विट्जरलैंड। उनमें से प्रत्येक ने अपने प्यारे आका के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चाकलेट प्रदान किए।

मुलाकातों का यह कार्यक्रम पौने नौ बजे तक रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फज़ल में पधार कर नमाज़ मग़रबि तथा इशा पढ़ाई नमाज़ों के अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अपने निवास पर पधारे।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

D.T.P केंद्र नज़ारत नश्रो इशाअत कादियान मैं एक कंप्यूटर ऑपरेटर चाहिए।

(नोट: यह घोषणा केवल लजना के सदस्यों के लिए है।)

D.T.P केंद्र नज़ारत नश्रो इशाअत में लेडीज़ कम्पयूटर ऑपरेटर बिल्मुक्ता खाली रिक्त साथान को भरने की ज़रूरत है। लज्ना की उम्मीदवार कवायफ फार्म नज़ारत दीवान से प्राप्त करके उसे पूरा करने के बाद अपने आवेदन शैक्षिक प्रमाणपत्र प्रतियां attested के साथ अमीर पार्टी, सदर जमअत,सदर लजना की पुष्टि के साथ 2 महीने के अंदर भिजवा दें। जज़ाकमुल्लाह

शर्तें: (1) उम्मीदवार की शिक्षा न्यूनतम 2+ (सेकंड डिवीज़न) हो, हिंदी, उर्दू लिखना पढ़ना जानती हो

(2) कंप्यूटर विज्ञान में डिप्लोमा किया हो।

(3) In-Design, MS-Word और In-Page के बारे में बुनियादी जानकारी हो

(4) हिन्दी, उर्दू टाइपिंग में कुशल और कम से कम एक साल का अनुभव हो

(5) टाइपिंग Key Board देखे बिना कर सकती हो, एक घंटे में कम से कम 300 शब्दों लिख सकती हो

(6) हिंदी टाइपिंग In-Design सॉफ्टवेयर Chanakya Unicode फ़ॉन्ट करना जानती हो और इसी तरह उर्दू टाइपिंग In-Page सॉफ्टवेयर करना जानती हो।

(7) वक्फे जीवन वक्फ नौ तहरीक में शामिल होने वाली सदस्य अपना संदर्भ संज़ूरी वक्फे नौ और वक्फे नौ भी आवेदन में लिखें

(8) आवेदन में अपने पिता, पति, अभिभावक के पुष्टिकरण के हस्ताक्षर भी हूँ।

(9) उम्मीदवार को साक्षात्कार की तिथि से बाद में सूचित किया जाएगा, साथ ही कादियान साक्षात्कार के लिए आवाजाही का खर्च ख़ुद वहन करने होंगे

(10) कादियान में आवास की जिम्मेदारी उम्मीदवार की अपनी होगी।

सदर अंजुमन अहमदिया में ड्राईवर के रूप में सेवा करने वाले ध्यान दें।

सदर अंजुमन अहमदिया कादियान में ड्राईवर की आसामी भरी जानी है जो दोस्त ड्राईवर के रूप में सेवा करने के इच्छुक हैं वे अपने आवेदन 2 महीने के अंदर नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अंजुमन अहमदिया में भिजवा सकते हैं।

शर्तें: (1) उम्मीदवार के पास ड्राइविंग लाइसेंस और ड्राइविंग का अनुभव होना चाहिए

(2) उम्मीदवार के लिए शिक्षा की कोई शर्त नहीं है

(3) उम्मीदवार को बर्थ सर्टिफिकेट पेश करना आवश्यक होगा

(4) वही ड्राइवर सेवा के लिए लिए जाएंगे जो नूर अस्पताल कादियान से मेडिकल फिटनेस प्रमाण पत्र के अनुसार स्वस्थ और ठीक होंगे

(5) वही उम्मीदवार सेवा के लिए लिए जाएंगे जो साक्षात्कार बोर्ड नियुक्त कार्यकर्ताओं में सफल होंगे।

(6) उम्मीदवार ड्राइवर को दर्जा द्वितीय के बराबर भत्ता तथा अन्य सुविधाएं दी जाएंगी

(7) उम्मीदवार के कादियान आवाजाही की लागत अपने होंगे

(8) यदि उम्मीदवार का चयन होता है तो कादियान में अपने आवास का उसे ख़ुद प्रबन्ध करना होगा।

(नोट: प्रस्तावित आवेदन फार्म नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान से प्राप्त कर लें, आवेदन फार्म भर कर आने पर उसके अनुसार कार्रवाई होगी)

(नाज़िर दीवान कादियान)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क कर सकते हैं

नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदीया कादियान

मोबाइल: 09815433760 कार्यालय: 01872-501130

ई-मेल: nazaratdiwanqdn@gmail.com

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553

The Weekly **BADAR** *Qadian*

Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA

POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 7 June 2018 Issue No. 23

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

रमज़ानुल मुबारक के साथ

तहरीक जदीद की गहरी समानताएं

तहरीक जदीद के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब रज़ि अल्लाह तआला अन्हो तहरीक जदीद के साथ रमज़ान की समानताओं का वर्णन करते हुए फरमाते हैं

" अगर तुम रमज़ान से लाभ उठाना चाहते हो तो तहरीक जदीद पर अनुकरण करो। अगर तहरीक जदीद को लाभ पहुंचाना चाहते हो तो रोज़ों से सहीह लाभ उठाओ। तहरीक जदीद यही है कि सादा जीवन व्यतीत करो और मेहनत और कुरबानी का अपने आप को आदी बनाओ। यही शिक्षा रमज़ान तुम्हें सिखाने के लिए आता है अत: जिस काम के लिए रमज़ान आया है उस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कोशिश करो..... प्रत्येक आदमी को कोशिश करनी चाहिए कि इस का रमज़ान तहरीक जदीद वाला हो और तहरीक जदीद रमज़ान वाली। रमज़ान हमारे नफस को मारने वाला हुआ और तहरीक जदीद हमारी रूह को ज़िन्दगी देने वाली हुई। अत: जब मैंने कहा कि रमज़ान से लाभ उठाओ तो वास्तव में मैंने तुम्हें समझाया कि तुम तहरीक जदीद के उद्देश्यों को रमज़ान के आलोक में समझो। और जब मैं ने कहा कि तहरीक जदीद की तरफ ध्यान दो तो दूसरे शब्दों में मैंने तुम्हें कहा कि तुम प्रत्येक अवस्था में अपने ऊपर रमज़ान की अवस्था तारी करो और सहीह कुरबानी और निरन्तर कुरबानी की आदत डालो। जो रमज़ान बिना सच्ची कुरबानी के गुज़र जाता है वह रमज़ान नहीं और जो तहरीक जदीद बिना रूह की ताज़गी के गुज़र जाती है वह तहरीक जदीद नहीं।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 4 नवम्बर 1938 ई)

हुज़ूर अलैहिस्सालम फरमाते हैं कि

" रमज़ान के जो अन्तिम दस दिन हैं इन को तहरीक जदीद के बारे में पहले की कुरबानियों के लिए शुक्रिया और भविष्य के लिए खर्च करो। जिन को पिछले सालों में कुरबानी की तौफीक मिली वह इसके लिए अल्लाह तआला का शुक्र अदा करें और प्रत्येक दुआ करने वाला अल्लाह तआला से दुआ करे कि उस ने धर्म के सम्मान के लिए सिलसिला की मज़बूती के लिए जो कुरबानी की हुई है उस के नतीजा में अल्लाह तआला उस पर अपने फज़ल और रहमतें नाज़िल करे और उसके लिए अपनी मुहब्बत और बरकतों को नुज़ूल फरमाए। इसी मुहब्बत और श्रद्धा के अनुसार जिस के साथ उस ने ख़ुदा की राह में कुरबानी की थी।"

(अलफज़ल 15 नवम्बर 1938 ई पृष्ठ नम्बर 4)

जमाअत के मुख़लेसीन का आरम्भ से यह तरीका रहा है कि वे हमेशा आधे रमज़ान तक अपने तहरीक जदीद के वादों को शत प्रतिशत अदा कर के अल्लाह तआला के फज़लों को अपने अन्दर सूखने की कोशिश करते हैं अत: सारे दोस्तों से निवेदन है कि वह 20 रमज़ान मुबारक कर अर्थात 5 जून तक अपने वादों को पूरा अदा करने की कोशिश कर के हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के स्वीकृत दुआओं के वारिस बनें। अल्लाह तआला हम सब को इस की तौफीक प्रदान फरमाए। आमीन।

(वकीलुल माल तहरीक जदीद)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

दोषों और भूलों को अधिक से अधिक क्षमा करता है, और दुर्भाग्यशाली है वह जो हठधर्मी से काम लेते हुए उसे क्षमा नहीं करता। ऐसे व्यक्ति का मुझ से कोई नाता नहीं। ख़ुदा की फटकार से डरो कि वह पवित्र और स्वाभिमानी है। कुकर्मी ख़ुदा के निकट नहीं हो सकता, अभिमानी उसके निकट नहीं हो सकता, अत्याचारी उसके निकट नहीं हो सकता,धरोहर को हड़प जाने वाला उसके निकट नहीं हो सकता और प्रत्येक जो उसके नाम के लिए मर मिटने वाला नहीं उसके निकट नहीं हो सकता, वे जो भौतिक साधनों पर कुत्तों, चीलों और गिद्दों की भांति टूट पड़ते हैं वे सांसारिक भोग-विलास में लीन हैं वे ख़ुदा के निकट नहीं हो सकते। प्रत्येक अपवित्र दृष्टि उस से परे है, प्रत्येक अपवित्र हृदय उस से बे ख़बर है। वह जो उसके लिए अग्नि में है उसे अग्नि से मुक्ति दी जाएगी, वह जो उसके लिए रोता है वह हंसेगा, वह जो उसके लिए संसार से विरक्त होता है वह उसे प्राप्त होगा। तुम सच्चे दिल, पूर्ण सच्चाई और लगन से ख़ुदा के मित्र बन जाओ ताकि वह भी तुम्हारा मित्र बन जाए। तुम अपने अधीन काम करने वालों, अपनी पत्नियों और अपने दीन भ्रातृजनों पर दया करो ताकि आकाश पर तुम पर भी दया हो । तुम वास्तव में उसके हो जाओ ताकि वह भी तुम्हारा हो जाए।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 कश्ती नूह पृष्ठ 11)

☆ ☆ ☆

सदकुतल फितर का अदा करना

अलहम्दो लिल्लाह हम रमज़ान के बरकतों वाले महीने से गुज़र रहें हैं। रमज़ान का दूसरा अशरा शुरू हो चुका है इस्लाम में फितराना के अदा करने के लिए एक साअ अनाज (दो लगभग 2 किलो 750 ग्राम के बराबर है।) निर्धारित है। जमाअत के लोग पूरी शरह के साथ रमज़ुनल मुबारक के दूसरा अशरा के पूरा होने तक सदकतुल फितर को अदा करने की कोशिश करें। चूंकि भारत के प्रान्तों में अनाज(गेहूं, चावल) का रेट अलग अलग है इस लिए अपने स्थानीय रेट के अनुसार निर्धरित (2 किलो 750 ग्राम) अनाज की कीमत अदा करें।

पंजाब के लिए इस बार सदकुतल फितर की रकम 52 रूपए निर्धारित की गई है। स्थानीय जमाअत में ग़रीब और ज़रूरत मंद होने की हालत में सदकतुल फितर की नव्वे प्रतिशत रकम मज्लिसे आमला के परामर्श और फैसला के बाद बांटी सकती है बाकी रकम केन्द्र में जमा करवानी होगी। जिस जमाअत में ग़रीब तथा ज़रूरत मंद न हों उस जमाअत की वसूल की गई सारी रकम सदर अंजुमन अहमदिया के अकाऊंट में जमा होगी। स्पष्ट हो कर फितरना की रकम मस्जिद आदि बनाने में खर्च करने का आज्ञा न होगी।

ईद फण्ड

यह चन्दा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के ज़माना से स्थापित है। इस फण्ड का उद्देश्य यह है कि जहां खुशी के अवसर पर इंसान व्यक्तिगत ख़ुशी के लिए कपड़ों, खानों और दावतों आदि पर कई प्रकार के खर्च करता है दूसरों को तोहफे देता है वहां इस खुशी में धर्म के उद्देश्य को भी याद रखे। अहमदी जमाअत ने तो बैअत में यह वादा कर रखा है धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देंगे। इस उद्देश्य के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के ज़माना में इस मद में कमाने वाले अहमदी दोस्त एक रूपया प्रति व्यक्ति ईद फण्ड दिया करते थे। अब जब कि एक रूपया की कीमत वह नहीं रही अत: इसे एक रुपया तक सीमित रखने के स्थान पर अपने सामर्थय के अनुसार अदा करें। सुझाव है कि ईद के दिन जितना खर्च हो जाता है उस का आधा इस मद में जमा कर दिया जाए। ईद फण्ड की अदायगी ईद से पहले किसी भी दिन की जा सकती है। यह केन्द्रीय चन्दा है सारा का सारा सदर अंजुमन अहमदिया में जमा होना ज़रूरी है। इस में स्थानीय रूप से कोई रकम खर्च करने की आज्ञा नहीं है।

(नाज़िर बैयतुल माल)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad